साप्ताहिक हिन्दी दैनिक

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

वर्ष - 02 | अंक - 312 | जौनपुर, गुरूवार, 08 अगस्त 2024 | साप्ताहिक (संस्करण) | पेज - 4 | मूल्य - 2 रूपये

संक्षिप्त खबरें

प्रदेश में एक अक्तूबर से होगी धान खरीद

लखनऊ, संवाददाता। प्रदेश सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना के तहत एक अक्तूबर से पश्चिमी यूपी और एक नवंबर से पूर्वी यूपी के जिलों में किसानों से सीधे धान की खरीद शुरू करने के निर्देश दिए हैं। खाद्य एवं रसद विभाग ने इस संबंध में समय सारिणी जारी कर दी है। प्रमुख सचिव, खाद्य एवं रसद आलोक कुमार ने बताया कि ई–टेंडर के माध्यम से हैंडलिंग ठेकेदारों की नियुक्ति, परिवहन के लिए ठेकेदारों की नियुक्ति पश्चिमी यूपी के जिलों में 25 अगस्त और पूर्वी यूपी के जिलों में 31 अगस्त तक कर ली जाएगी।

कांग्रेस देश को अराजकता की स्थिति में धकेलना चाहती – अनुराग

नई दिल्ली, एजेंसी। बांग्लादेश विरोध पर उनकी टिप्पणी को लेकर कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद पर निशाना साधते हुए भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने बुधवार को कहा कि कांग्रेस देश को अराजकता की स्थिति में धकेलना चाहती है और यह पार्टी और उसके नेताओं की मानसिकता को दर्शाता है। सामना करने के बाद, कांग्रेस देश को अराजकता की स्थिति में धकेलना चाहती है...।

कोई राज्य पश्चिम बंगाल का माडल नहीं अपनाना चाहेगा – शाह

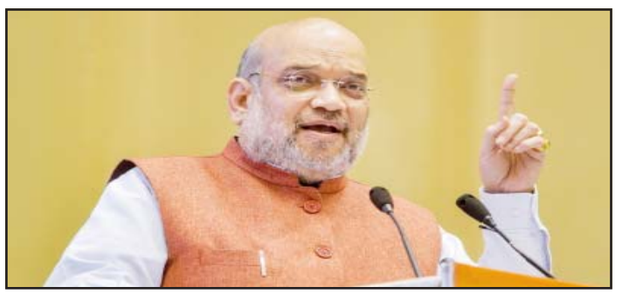

नई दिल्ली, एजेंसी। गृह मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल की तृणमूल सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि कोई भी राज्य वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) से निपटने में पश्चिम बंगाल के मॉडल का पालन नहीं करना चाहेगा। तृणमूल सांसद सौगत राय की संक्षिप्त प्रतिक्रिया में, जिन्होंने लोकसभा में कहा कि पश्चिम बंगाल सरकार वामपंथी उग्रवाद से निपटने में सफल रही है और पूछा कि क्या केंद्र राज्य के मॉडल का अध्ययन करेगा और अन्य राज्यों में इसका अनुकरण करेगा। इसके जवाब में अमित शाह ने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार को उन राज्यों के मॉडल को लागू करने में कोई समस्या नहीं है जिन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन मेरा मानना है कि कोई भी राज्य पश्चिम बंगाल मॉडल को लागू करना पसंद नहीं करेगा। वहीं, गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने पूरक प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा कि पिछले 10 वर्षों में वामपंथी उग्रवाद की घटनाओं में 53 प्रतिशत की कमी आई है तथा इन घटनाओं में सुरक्षा बलों की मौत के मामलों में भी 72 प्रतिशत की कमी हुई है। उन्होंने कहा कि वामपंथी उग्रवाद की गतिविधियों में लिप्त लोग इस देश के संविधान और लोकतंत्र में विश्वास नहीं करते हैं तथा वो हथियार के माध्यम से सत्ता हथियाना चाहते हैं। राय ने कहा कि वर्ष 2010 में 96 जिले वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित थे।

सनातन को बचाने के लिए एकजुट होकर लड़ना होगा - योगी

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बांग्लादेश में बिगड़े हालात पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि पड़ोसी देश में हिंदुओं पर हमले हो रहे हैं। वहां मंदिर तोड़े जा रहे हैं। हमें सनातन को बचाने के लिए एकजुट होकर लड़ना होगा। उन्होंने कहा कि जो समाज इतिहास का गलतियों से सबक नहीं सीखता है, उसके भविष्य पर ग्रहण लगता है। एक न्यूज एजेंसी से बात करते हुए सीएम योगी ने कहा, श्आप दुनिया की तस्वीर वर्तमान में देख रहे हैं, कुछ तो हमें देखना पड़ेगा। आज भारत के तमाम पड़ोसी जल रहे हैं। मंदिर तोड़े जा रहे हैं। चुन–चुनकर हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है। तब भी हम इतिहास के परतों को ढूंढने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, इस प्रकार की स्थिति क्यों पैदा हुई।

योगी ने आगे कहा, 'सनातन धर्म पर आने वाले संकट के लिए फिर एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है, इसके लिए एकजुट होकर लड़ने की आवश्यकता है। गौरतलब हो, बांग्लादेश में जब सोमवार पांच अगस्त को प्रदर्शनकारी प्रधानमंत्री आवास की ओर बढ़े तो पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने इस्तीफा दे दिया था और देश छोड़कर भारत आ गईं थीं। उन्हें पहले गाजियाबाद के हिंडन एयरबेस पर एक सेफ हाउस में ठहराया गया था, लेकिन बाद में उन्हें दिल्ली में सुरक्षित जगह पहुंचा दिया गया है।

कुछ घंटे बाद ही बांग्लादेश के राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन ने जनवरी 2024 में चुनाव के बाद बनी संसद को भंग करने की घोषणा कर दी। नोबेल अर्थशास्त्री मोहम्मद यूनुस को बांग्लादेश की अंतरिम सरकार का मुखिया चुना गया है। फिलहाल हसीना हिन्दुस्तान में ठहरी हुई हैं। वह बांग्लादेश के हालात से सदमें में हैं।

वायनाड भूस्खलन को राष्ट्रीय आपदा घोषित करे केंद्र सरकार - राहुल

नई दिल्ली, एजेंसी। विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार से वायनाड भूस्खलन को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने की मांग की है। राहुल गांधी ने बुधवार को लोकसभा में कहा कि वायनाड में भीषण त्रासदी हुई है। वे कुछ दिन पहले अपनी बहन के साथ वायनाड गए थे और इस त्रासदी से उत्पन्न तबाही, दर्द और पीड़ा को उन्होंने अपनी आंखों से प्रत्यक्ष रूप से देखा।

राहुल गाँधी ने वायनाड का किया विश्लेषण

उन्होंने कहा, वहां पर पहाड़ का लगभग दो किलोमीटर का हिस्सा पूरा गिर गया है। सैकड़ों लोग मारे गए हैं, और कई लापता हैं। हालांकि अंततः हताहतों की संख्या चार सौ से अधिक होने की आशंका है। उन्होंने राहत एवं बचाव कार्य में जुटी एजेंसियों की सराहना करते हुए कहा कि वहां पर केंद्र सरकार, राज्य सरकार, सेना, एनडीआरफ सहित अन्य कई एजेंसियां राहत एवं बचाव कार्य कर रही हैं। कर्नाटक, तमिलनाडु और तेलंगाना की राज्य सरकार भी सहायता कर रही है। सभी लोग वहां के प्रभावित लोगों की मदद कर रहे हैं। यह देखकर अच्छा लगा कि सभी समुदाय एक साथ आए और मदद की। उन्होंने कहा कि प्रभावित लोगों के पुनर्वास के लिए समग्र योजना बनाने की जरूरत है। केंद्र सरकार एक व्यापक पुनर्वास पैकेज प्रदान करे और साथ ही पीड़ित लोगों के लिए घोषित मुआवजे की राशि को भी बढ़ाए। उन्होंने केंद्र सरकार से वायनाड त्रासदी को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने की भी मांग की राहुल गांधी ने इसे बहुत ही भीषण त्रासदी बताते हुए कहा कि यह आपदा इतनी भयावह थी कि कई परिवार में सिर्फ एक ही व्यक्ति बचा है। यह बहुत बड़ी त्रासदी है, रेस्क्यू टीम को भी प्रभावित इलाकों में पहुंचने में दिक्कत हो रही है। उन्होंने वायनाड के लोगों का साथ देने के लिए पूरे सदन को भी धन्यवाद कहा। आपको बता दें कि राहुल गांधी वायनाड से लोकसभा सांसद रह चुके हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में भी वे केरल के वायनाड के साथ–साथ उत्तर प्रदेश के रायबरेली से लोकसभा का चुनाव जीते थे लेकिन बाद में उन्होंने वायनाड लोकसभा सीट से इस्तीफा दे दिया था। राहुल गांधी के भाषण के बाद सदन में शोर शराबे का विरोध करते हुए केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कांग्रेस सांसदों के अनावश्यक सदन में खड़े होने का मुद्दा उठाया। इसके बाद सदन में बजट पर बोलने के लिए खड़े हुए भाजपा सांसद जगदंबिका पाल ने राहुल गांधी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि यह उनकी (राहुल गांधी) आदत है, एक नई परंपरा शुरू हुई है। विपक्ष के नेता अपनी बात बोलते हैं और चले जाते हैं। राहुल गांधी के विपक्ष के नेता बनने के बाद यह नई परंपरा शुरू हुई है कि वे अपनी बात कहते हैं और जब सरकार की तरफ से जवाब दिया जाता है तो इनके सांसद हंगामा करते हैं, वेल में आ जाते हैं।

हमें अदालत पर भरोसा – तेजस्वी

बिहार, एजेंसी। रेलवे में नौकरी के बदले जमीन मामले में ईडी द्वारा पूरक आरोपपत्र दाखिल करने पर राजद नेता तेजस्वी यादव का बयान सामने आया है। अपने बयान में तेजस्वी यादव ने कहा कि इससे कुछ नहीं बदलेगा। हमें अदालत पर भरोसा है और हम शुरू से कहते रहे हैं कि हमारा मामला मजबूत है और यह (आरोपपत्र) टिकेगा नहीं। यह तो महज औपचारिकता है। नौकरी के बदले जमीन घोटाले में दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में नई पूरक चार्जशीट दाखिल की। ईडी ने अपनी नई चार्जशीट में मनी लॉन्ड्रिंग मामले में 8 लोगों को आरोपी बनाया है। आरोपियों में पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव और उनके बेटे तेजस्वी यादव समेत अन्य शामिल हैं। नई सप्लीमेंट्री चार्जशीट 1000 पन्नों की है. राउज एवेन्यू कोर्ट 13 अगस्त को ईडी द्वारा दायर आरोप पत्र पर संज्ञान लेगा। आरोप पत्र विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने के समक्ष दायर किया गया था, जिन्होंने मामले को 13 अगस्त को विचार के लिए पोस्ट किया था। ईडी द्वारा दर्ज किया गया मामला केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा दर्ज की गई एक प्राथमिकी से उपजा है। विशेष रूप से, कथित घोटाला उस समय का है जब लालू यादव यूपीए–1 सरकार में रेल मंत्री थे। आरोप है कि 2004 से 2009 तक भारतीय रेलवे के अलग–अलग जोन में ग्रुप डी के पदों पर कई लोगों की नियुक्ति की गई और बदले में इन लोगों ने उनकी जमीनें तत्कालीन रेल मंत्री लालू यादव के परिवार के सदस्यों और उनकी संबंधित कंपनी एके इंफोसिस प्राइवेट लिमिटेड के नाम कर दीं।

पर्यटन से भारत को तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में मदद मिलेगी

श्रीनगर, एजेसी। केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि पर्यटन क्षेत्र भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान देगा। शेखावत ने यहां एक कार्यक्रम से इतर पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि इस क्षेत्र में देशभर में रोजगार सृजन की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हम देश को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। अब तक हम इसे 11वें स्थान से पांचवें स्थान पर लाने में सफल रहे हैं।'' जम्मू–कश्मीर के पर्यटन क्षेत्र की समीक्षा करने यहां आए शेखावत ने कहा, ''पर्यटन देश को पांचवें स्थान से तीसरे स्थान पर ले जाने में महत्पूर्ण भूमिका निभाएगा।'' मंत्री ने कहा कि आर्थिक रूप से समृद्ध होने के कारण यात्रा करने के लिए अपने घरों को छोड़ने वाले भारतीयों की संख्या लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में विकास का एक नया अध्याय लिखा गया है और इसने दुनिया का भारत को देखने का नजरिया बदल दिया है। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने जिस गति से विकास किया है, उससे दुनिया अचंभित है और अब वह देश को नए सिरे से जानना चाहती है।'' शेखावत ने कहा कि केंद्र सरकार मौजूदा पर्यटन स्थलों पर भीड़भाड़ कम करने के लिए नए पर्यटन स्थल विकसित करने के वास्ते राज्यों को हरसंभव सहायता प्रदान करेगी।

हरियाणा में उज्ज्वला योजना के तहत लाभार्थी परिवारों को अब 500 रुपये में गैस सिलेंडर मिलेगा - सीएम

हरियाणा, एजेंसी। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बुधवार को कहा कि प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत लाभार्थी परिवारों को अब 500 रुपये में गैस सिलेंडर मिलेगा। सैनी ने यह घोषणा राज्य में कुछ महीने बाद होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले और 'हरियाली तीज' के मौके पर की। उन्होंने यहां जींद में आयोजित राज्य–स्तरीय तीज उत्सव में कहा, "प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत लाभार्थी परिवारों को अब 500 रुपये में गैस सिलेंडर मिलेगा। इससे प्रदेश के 1.80 लाख रुपये से कम आय वाले लगभग 46 लाख परिवारों को लाभ मिलेगा। सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री दुग्ध उपहार योजना के तहत अब स्कूलों में पढ़ने वाली 14 से 18 वर्ष की लड़कियों में कुपोषण को रोकने के लिए उन्हें भी 150 दिन 'फोर्टिफाइड' (अतिरिक्त पोषण–युक्त) दूध दिया जाएगा, जिससे 2.65 लाख किशोरियों को लाभ मिलेगा। उन्होंने हरियाणा मातृशक्ति उद्यमिता योजना के तहत स्वरोजगार स्थापित करने के लिए दी जाने वाली तीन लाख रुपये की ऋण राशि को बढ़ाकर पांच लाख रुपये करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वयं सहायता समूहों को दैनिक जरूरतों के लिए दिए जाने वाले 20 हजार रुपये के 'रिवोल्विंग फंड' की राशि को भी बढ़ाकर 30 हजार रुपये किया जाएगा। इसके अलावा, उन्होंने समूह सखी के मासिक मानदेय को भी 150 रुपये से बढ़ाकर 500 रुपये करने की घोषणा की।

सैनी ने समारोह में स्वयं सहायता समूहों की महिला सदस्यों को सशक्त करने की दिशा में 100 करोड़ रुपये के ब्याज रहित ऋण भी प्रदान किये। उन्होंने कहा कि इस वित्त वर्ष में स्वयं सहायता समूहों को 490 करोड़ रुपये की राशि के ऋण उपलब्ध करवाये जाने का लक्ष्य है। मुख्यमंत्री ने कहा, हरियाणा सरकार ने विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के जरिये दो लाख बहन–बेटियों को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा, "बाईस जनवरी, 2015 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पानीपत से 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' राष्ट्रव्यापी अभियान की शुरुआत की थी।

हमारी सरकार और महिलाओं ने मिलकर इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाया है।

10वें राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर पीएम ने दी बधाई

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में आज 10वां राष्ट्रीय हथकरघा दिवस' मनाया जा रहा है। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने देशवासियों को हथकरघा दिवस की बधाई दी है।

पीएम मोदी ने अपने एक्स अकाउंट पर एक वीडियो शेयर कर दी बधाई

पीएम मोदी ने अपने एक्स अकाउंट पर एक वीडियो शेयर कर लिखा, "राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर बधाई। हम अपने देश में हथकरघा की समृद्ध विरासत और जीवंत परंपरा पर बहुत गर्व करते हैं। हम अपने कारीगरों के प्रयासों की भी सराहना करते हैं और वोकल फॉर लोकल होने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हैं। वहीं, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, "मैं राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर हमारे समर्पित बुनकर समुदाय और इस क्षेत्र से जुड़े लोगों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं। हथकरघा क्षेत्र भारत के गौरव, प्रगति और विरासत की छाप रखता है। मोदी सरकार इस क्षेत्र की समृद्धि के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। यह अवसर इस क्षेत्र को और मजबूत करने के लिए हथकरघा उत्पादों को बढ़ावा देने और अपनाने के हमारे संकल्प को और मजबूत करें। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की इस बीच उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 10वें राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की।

एनसीईआरटी की पाठ्य पुस्तकों से प्रस्तावना हटाने के आरोप का कोई ठोस आधार नहीं – धर्मेंद्र प्रधान

नई दिल्ली, एजेंसी। मानसून सत्र के दौरान कांग्रेस ने एनसीईआरटी पर अपनी किताबों से संविधान की

प्रस्तावना हटाने का आरोप लगाया है। इस पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि विपक्ष ने सदन में तथ्यों से परे बात की है। कांग्रेस द्वारा लगाए गए आरोपों का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि छठी कक्षा के लिए एनसीईआरटी की नई पाठ्य पुस्तकें जारी की गई हैं। इन सभी पुस्तकों में संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य, राष्ट्रगान आदि विषयों को पहले से अधिक शामिल किया गया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी की हताशा के कारण जिन लोगों ने संविधान को तोड़ने–मरोड़ने का सबसे अधिक काम किया, वही लोग आज संविधान के बारे में झूठ और भ्रांतियां फैला रहे हैं। हम तथ्यों को समाज के सामने रखते हैं। पीएम मोदी की सरकार संविधान के प्रति प्रतिबद्ध है। धर्मेंद्र प्रधान ने कहा, ष्राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि संविधान के विभिन्न मूल तत्वों को सभी पाठ्यपुस्तकों में लाया जाएगा। और मैं कांग्रेस पार्टी के इस निराधार झूठ की निंदा करता हूं और उम्मीद करता हूं कि राहुल गांधी इस झूठ के लिए देश से माफी मांगेंगे। एनसीईआरटी ने एक्स पर पोस्ट कर लिखा, एनसीईआरटी की पाठ्य पुस्तकों से प्रस्तावना को हटाने के आरोपों का कोई ठोस आधार नहीं है।

विनेश को अयोग्य घोषित किए जाने की गहरी जांच–पड़ताल हो

लखनऊ, संवाददाता। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भारतीय पहलवान विनेश फोगाट को पेरिस ओलंपिक के फाइनल से पहले वजन अधिक होने के कारण अयोग्य करार दिए जाने की 'गहरी जांच–पड़ताल' कराए जाने की मांग की है।

अखिलेश ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, विनेश फोगाट के फाइनल में न खेल पाने के तकनीकी कारणों की गहरी जांच–पड़ताल हो और सुनिश्चित किया जाए कि सच्चाई क्या है और इसके पीछे की असली वजह क्या है। एक स्तब्ध कर देने वाले घटनाक्रम में विनेश को महिलाओं की 50 किलो कुश्ती स्पर्धा के फाइनल से पहले वजन अधिक पाए जाने के कारण बुधवार को ओलंपिक से अयोग्य घोषित कर दिया गया। विनेश ने ओलंपिक के फाइनल मुकाबले में पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान बनकर इतिहास रचा था। उन्हें बुधवार देर रात स्वर्ण पदक का मुकाबला खेलना था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विनेश को हौसला देते हुए कहा कि वह भारत का गौरव हैं और उन्हें मजबूती से वापसी करनी है। उन्होंने 'एक्स' पर लिखा, ''विनेश आप चौम्पियनों में चौम्पियन हो। आप भारत का गौरव हो और हर भारतीय के लिए प्रेरणास्रोत हो।

हर घर तिरंगा अभियान और को उत्सव के रूप में मनाया जाए – सीएम यादव

भोपाल, एजेसी। मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता दिवस पर हर घर तिरंगा फहराने की तैयारियां जोरों पर है। प्रदेश के डेढ़ करोड़ घरों पर तिरंगा फहराए जाने का लक्ष्य रखा गया है। सीएम मोहन यादव ने कहा कि तिरंगे की कमी नहीं होने दी जाएगी, स्व सहायता समूह के माध्यम से झंडे की व्यवस्था की जाए। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रक्षा बंधन और श्हर घर तिरंगा अभियान को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक की। प्रदेश में श्हर घर तिरंगा अभियान और 15 अगस्त को जन उत्सव के रूप में मनाया जाए। अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि किसी भी वार्ड या ग्राम में तिरंगे झंडे की कमी नहीं हो। शत–प्रतिशत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए स्व सहायता समूहों के माध्यम से व्यवस्था की जाए। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि प्रदेश में रक्षा बंधन और जन्माष्टमी

का पर्व सामाजिक समरसता के भाव के साथ उत्साह और उल्लास से मनाया जाए। रक्षा बंधन का पर्व भी धूमधाम से मनाया जाने वाला है। प्रदेश के 25 हजार स्थानों पर एक साथ भाई–बहन का पवित्र त्योहार रक्षा बंधन मनाया जाएगा।

संपादकीय

बजट में वृद्धि

केंद्रीय बजट में महिलाओं और लड़कियों को लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं के लिए 3 लाख करोड़ रुपये से अधिक का आवंटन किया गया है। अगर सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए, तो यह आवंटन ऐसे देश के लिए गेम–चेंजर साबित हो सकता है, जिसने कार्यबल में महिलाओं की बेहद कम भागीदारी देखी है। विश्व आर्थिक मंच के 2024 के वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक में भारत 146 देशों में 129वें स्थान पर है। नवीनतम आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) ने बताया कि कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी दर 2022–23 में 35.9 प्रतिशत थी, जबकि पुरुषों की 76 प्रतिशत थी – 40 प्रतिशत से अधिक का अंतर। हालांकि 2017–18 के पीएलएफएस दौर से महिलाओं की भागीदारी में 13.9 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई है, लेकिन इसका श्रेय ज्यादातर स्वरोजगार को जाता है, जो लगभग 65 प्रतिशत है। स्वरोजगार में महिलाओं की एकाग्रता, ज्यादातर अनौपचारिक, नीतिगत दृष्टिकोण से एक बड़ी चिंता बनी हुई है क्योंकि यह निम्न–गुणवत्ता वाले काम और सामाजिक सुरक्षा तक पहुँचने में चुनौतियों को दर्शाता है। रोजगार सृजन और रोजगार क्षमता में सुधार सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की गई हैं। पीएलएफएस ने दिखाया है कि महिलाएँ ज़्यादातर सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों में कार्यरत हैं। नवीनतम बजट का उद्देश्य उद्योग के सहयोग से छात्रावासों की स्थापना और क्रेच की स्थापना के माध्यम से कामकाजी महिलाओं का समर्थन करना है, जो महिलाओं की विभिन्न क्षेत्रों में काम करने की क्षमता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। महिलाओं की कार्य भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ अन्य प्रस्तावों में महिलाओं के लिए विशेष कौशल कार्यक्रमों को बढ़ावा देना और महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों के लिए बाजार तक पहुँच शामिल है। ऐसी पहलों में उद्यमिता को बढ़ावा देने की क्षमता है। छोटे उद्यमों और विनिर्माण, विशेष रूप से श्रम–गहन विनिर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाना एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि विनिर्माण क्षेत्र महिलाओं के सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक है। बजट में एक पैकेज शामिल है जिसमें विकास को प्रोत्साहित करने के लिए छोटे उद्यमों के लिए वित्तपोषण, विनियामक परिवर्तन और प्रौद्योगिकी सहायता शामिल है। हालाँकि विनिर्माण शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को रोजगार देने वाले सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक है, लेकिन वे ज़्यादातर परिधान, कपड़ा और तम्बाकू क्षेत्रों में निम्न–स्तरीय प्रसंस्करण कार्यों में कार्यरत हैं। जुलाई 2020 में उद्यम पंजीकरण पोर्टल की स्थापना के बाद से इस पर पंजीकृत कुल एमएसएमई में महिलाओं के स्वामित्व वाले एमएसएमई की हिस्सेदारी 20.5 प्रतिशत है। उद्यम–पंजीकृत एमएसएमई के कुल कारोबार में महिलाओं के स्वामित्व वाले एमएसएमई का योगदान 10.22 प्रतिशत है। हालांकि, एमएसएमई में वेतन अंतर है क्योंकि महिलाएँ ज़्यादातर अनौपचारिक व्यवस्था में हैं। शैक्षिक योग्यता, कौशल, पर्याप्त कल्याण की कमी, साथ ही घरेलू देखभाल की जिम्मेदारियों का बोझ महिलाओं को इन क्षेत्रों की ओर धकेलता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, सरकार ने अतीत में कई योजनाएँ शुरू की हैं, जिनमें महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित सखी निवास के रूप में जानी जाने वाली कामकाजी महिलाओं के छात्रावास शामिल हैं। इस केंद्र प्रायोजित योजना का उद्देश्य शहरी, अर्ध–शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं के लिए उनके बच्चों के लिए डेकेयर सुविधाओं के साथ सुरक्षित और सुविधाजनक स्थान पर आवास की उपलब्धता को बढ़ावा देना है। वर्तमान में, देश में बच्चों की डेकेयर सुविधाओं के साथ 494 केंद्र प्रायोजित कार्यात्मक कामकाजी महिला छात्रावास हैं। 1972–73 में शुरू की गई यह योजना 2021–22 में सामर्थ्य उप–योजना के तहत मिशन शक्ति का हिस्सा बन गई। वित्त वर्ष 2024–25 के दौरान इस योजना के लिए बजट आवंटन 87.40 करोड़ रुपये था। सरकारी रिपोर्टों के अनुसार, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे कुछ राज्यों ने अभी तक ऐसे छात्रावास स्थापित नहीं किए हैं, जबकि केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे कुछ दक्षिणी राज्यों में ऐसे छात्रावासों की संख्या अधिक है। नए बजट आवंटन वाले राज्यों में इन्हें मजबूत किया जा सकता है, जहाँ कम या कोई छात्रावास नहीं हैं। जनवरी 2024 में, श्रम और रोजगार मंत्रालय ने नियोक्ताओं के लिए एक सलाह जारी की, जिसमें कामकाजी महिलाओं के लिए केंद्र बनाने की आवश्यकता को दर्शाया गया, जहाँ स्थानीय बड़े और छोटे उद्यम संलग्न क्रेच और वरिष्ठ देखभाल सुविधाओं के साथ सामान्य सुविधाएँ बनाने के लिए सहयोग कर सकते हैं। छोटे उद्यमों के लिए बजटीय सहायता का उपयोग ऐसे केंद्र बनाने के लिए किया जा सकता है, जिससे महिलाओं के लिए कार्यबल में शामिल होना संभव हो सके। कौशल पर बजट का जोर ढेर सारे अवसरों को खोलता है। एक दिलचस्प पहलू यह है कि इसका ध्यान कौशल पाठ्यक्रमों पर है जो लंबे समय से अकादमिक और नीतिगत चर्चा में रहे हैं। औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) पर महिलाओं के लिए ब्यूटीशियन और टेलरिंग पाठ्यक्रम और पुरुषों के लिए ड्राइविंग, प्लंबिंग, इलेक्ट्रिकल पाठ्यक्रम जैसे लैंगिक रूढ़िवादी ट्रेडों को बढ़ावा देने के लिए सवाल उठाए गए हैं। पीएलएफएस के अनुसार, 2021–22 में 15–59 आयु वर्ग में 12.3 प्रतिशत महिलाओं और 26 प्रतिशत पुरुषों ने व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसमें स्पष्ट लिंग अंतर है।

बांग्लादेश के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण

आदित्य

ढाका में जो दृश्य देखने को मिले, वे 2022 में श्रीलंका में सरकार के तख्तापलट के क्षणों जैसे ही थे। भारत के पूर्वी पड़ोसी देश में 13 जुलाई, 2022 के उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन की तरह ही स्थिति थी, जब देश भर में लोग सड़कों पर उतर आए थे, कोलंबो में राष्ट्रपति भवन पर धावा बोल दिया था और तत्कालीन राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के देश छोड़कर भाग जाने पर जश्न मनाने लगे थे। बिना किसी कमी के एक बड़े पैमाने पर विद्रोह ने चार बार की प्रधानमंत्री 'आयरन बेगम' शेख हसीना को देश छोड़कर भागने पर मजबूर कर दिया, इस तरह 15 साल के निरंकुश शासन का अंत हो गया, जिसमें सत्तारूढ़ दल ने किसी भी असहमति का सम्मान नहीं किया। यह वास्तव में बहुत परेशान करने वाला है कि भारत का करीबी पड़ोसी, जिसने पिछले दशक में अपनी अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित किया है, सबसे बड़ी नागरिक अशांति का गवाह बन रहा है और एक गहरे संकट में डूब रहा है। छात्र हड़तालों से शुरू हुआ यह आंदोलन धीरे–धीरे राजनीतिक ताकतों द्वारा आग को हवा देने के साथ बढ़ता गया। संकट की जड़ में पाकिस्तान के खिलाफ बांग्लादेश के 1971 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले दिग्गजों के परिजनों के लिए सरकारी नौकरियों में 30 प्रतिशत तक का विवादास्पद कोटा है। हालांकि 2008 में इसे कुछ समय के लिए रोक दिया गया था, लेकिन जल्द ही इसे फिर से शुरू कर दिया गया और इसे हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग के समर्थकों के लिए फायदेमंद माना जा रहा है यह कोटा शेख मुजीबुर रहमान ोमपी उनरपइनत तीउंद के उस वादे के मद्देनजर बनाया गया था, जिसमें उन्होंने पाकिस्तानी सेना द्वारा किए गए अत्याचारों और बलिदानों को सहने वालों के साथ न्याय करने का वादा किया था। उनकी हत्या के बाद, कोटा प्रणाली को कमजोर कर दिया गया और समाज के अन्य वर्गों तक बढ़ा दिया गया, जिससे लोगों में आक्रोश पैदा हुआ। शुरू में, हिंसा छिटपुट नहीं थी, लेकिन जल्द ही यह सरकार विरोधी ताकतों के हाथों में खेलने लगी। सरकार ने बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी और जमात–ए–इस्लामी पर परेशानी बढ़ाने और भावनाओं को भड़काने का आरोप लगाया। हालांकि सुप्रीम कोर्ट द्वारा कोटा प्रणाली को रद्द करने के बाद विरोध प्रदर्शन शांत हो गए, लेकिन जल्द ही हिंसा भड़क उठी, जिसमें पुलिस और सुरक्षा बलों के साथ झड़पों में मारे गए सैकड़ों लोगों, जिनमें ज़्यादातर युवा और बच्चे थे, के लिए न्याय के नाम पर सरकार को हटाने की मांग की गई। प्रदर्शनकारियों का सिर्फ एक ही एजेंडा था, यानी हसीना का इस्तीफा। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में गिरावट, जिसके परिणामस्वरूप औपचारिक नौकरियाँ कम हो गईं और इसके परिणामस्वरूप भारी बेरोजगारी ने प्रदर्शनकारियों को भड़का दिया, और कोटा प्रणाली पर अपना गुस्सा निकाला। बांग्लादेश सिविल सेवा में सभी कोटा रद्द करके हसीना के तुष्टिकरण से बर्फ नहीं जमी। इससे वे लोग भी नाराज हुए जो केवल इस प्रणाली में सुधार चाहते थे, लेकिन इसे पूरी तरह से खत्म नहीं करना चाहते थे। विरोध प्रदर्शनों के पीछे पाकिस्तान की ैप का हाथ होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। भारत को अपने पड़ोसी में सांप्रदायिक ताकतों के फिर से उभरने के प्रति सतर्क रहना चाहिए, जिसका उसकी सुरक्षा पर बहुत बड़ा असर होगा। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि हाल ही में हिंदू–विरोधी और भारत–विरोधी नारे बढ़े हैं और सोमवार को मंदिरों पर भी हमले हुए। भारत को लोकतांत्रिक देशों को एकजुट करने के लिए अपने सभी तरीकों और साधनों का इस्तेमाल करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि पड़ोसी देश कट्टरपंथी इस्लामी राज्य न बन जाए। हसीना का चुनाव खुद ही फर्जी लग रहा था क्योंकि मुख्य विपक्षी दल बीएनपी ने चुनावों का बहिष्कार किया था, जिसमें मतदाताओं की संख्या बहुत कम थी। अंतरराष्ट्रीय पर्यवेक्षकों ने कहा कि यह एक खोखली जीत थी। लोगों की चिंताओं पर त्वरित प्रतिक्रिया और लोकतांत्रिक संस्थाओं को बनाए रखने के साथ–साथ बेरोजगारी की समस्या को संबोधित करने से प्रदर्शनकारियों को शुरुआत में ही शांत किया जा सकता था। लेकिन, प्रधानमंत्री ने अपनी बात नहीं मानी और विपक्ष ने आगे आकर फैसला सुनाया। यह बांग्लादेशियों के लिए एक निर्णायक क्षण है। वे जिस तरह की सरकार के लिए राजी होंगे, वह उनके भाग्य का फैसला करेगी। पहली नजर में, भारत अपने पूर्वी मोर्चे पर इस्लामी कट्टरपंथ के खिलाफ खड़ा होने के लिए तैयार है। म्यांमार के गृहयुद्ध ने शरणार्थियों की आमद के कारण हमारे पूर्वोत्तर के लिए पहले से ही एक बड़ी समस्या पैदा कर दी है। इसके अलावा, पाकिस्तान इसे परेशान करने में कभी पीछे नहीं रहता, जबकि चीन के साथ स–ाब पर गतिरोध बना हुआ है। हम बांग्लादेश को अफगानिस्तान या पाकिस्तान के रास्ते पर जाने का जोखिम नहीं उठा सकते।

प्रवासी विरोधी रोष

विनोद

साउथपोर्ट में एक डांस क्लास में छोटे बच्चों की क्रूर चाकू मारकर हत्या के बाद यह देश में बेहद दुखद सप्ताह रहा है। इस कृत्य के कारण तीन युवा लड़कियों की मौत हो गई – जबकि अन्य बच्चे और दो वयस्क जो वहां मौजूद थे, गंभीर रूप से घायल हो गए।ब्रिटिश मूल के 17 वर्षीय एक्सल रादुकुबाना ने चाकू से वार किया था, जिससे सभी घायल और सदमे में थे। मरने वाले बच्चों की उम्र नौ से छह साल के बीच थी – और वे एक सामुदायिक केंद्र में थे जहाँ अक्सर नृत्य और योग कक्षाएं आयोजित की जाती थीं। इस क्रूर दिन पर, टेलर स्विफ्ट से प्रेरित एक विशेष नृत्य कक्षा का आयोजन किया जाना था।जबकि अमेरिका में अक्सर स्कूली बच्चों को निशाना बनाकर बंदूक से संबंधित हत्याओं की खबरें सुनने को मिलती हैं – ब्रिटेन में यह अभी भी तुलनात्मक रूप से दुर्लभ है। लेकिन हाल के वर्षों में चाकूबाजी से जुड़े अपराध में वृद्धि हुई है, जिसका उल्लेख अक्सर चिंता के साथ किया जाता रहा है।दुख की लहर स्वतःस्फूर्त थी – और प्रधान मंत्री सर कीर स्टार्मर सहित कई लोग पीड़ितों और बचे लोगों के परिवारों के साथ अपना दुख और एकजुटता व्यक्त करने के लिए साउथपोर्ट गए। हालाँकि, स्थिति जल्द ही हिंसक हो गई जब सोशल मीडिया पोस्ट से भड़की अफवाहों ने दावा करना शुरू कर दिया कि हत्यारा एक मुस्लिम युवक था – जो गलत निकला। वास्तव में, वह रवांडा मूल के हैं लेकिन उनके माता–पिता (जो ईसाई हैं) के रवांडा से भाग जाने के बाद उनका जन्म कार्डिफ में हुआ था। वे अब साउथपोर्ट से कुछ ही मील की दूरी पर रहते हैं। लेकिन पुलिस द्वारा उसके नाम का खुलासा करने का इंतजार करने के बजाय, इंग्लिश डिफेंस लीग (ईडीएल) के नेतृत्व में धुर दक्षिणपंथी गुंडों ने साउथपोर्ट में एक मस्जिद पर पथराव करना शुरू कर दिया – और जल्द ही हिंसा, बेरोकटोक, देश के अन्य हिस्सों में फैल गई। इस सप्ताहांत में ईडीएल, उनके समर्थकों और पुलिस के बीच कई टकराव देखने को मिले और साथ ही अप्रवासियों से जुड़े ठिकानों पर लगातार हमले भी हुए। अब धुर दक्षिणपंथियों ने अपना हमला मुसलमानों से हटाकर आप्रवास–विरोध पर केंद्रित कर दिया है। पुलिस स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए संघर्ष कर रही है क्योंकि लंदन, ब्रिस्टल, ब्राइटन और लिवरपूल जैसे कई अन्य क्षेत्र भी फ्लैशप्वाइंट बन गए हैं।अच्छी खबर (यदि इस तरह के निराशाजनक क्षणों में कोई हो सकती है) यह है कि ईडीएल और अन्य दक्षिणपंथी प्रदर्शनकारियों को उन लोगों की भीड़ का सामना करना पड़ा है जो समावेशिता और बहु–संस्कृति में विश्वास करते हैं। हालाँकि यह एक उत्साहजनक विकास रहा है – प्रदर्शनकारियों और प्रति–प्रदर्शनकारियों के बीच होने वाले टकराव से निश्चित रूप से और अधिक समस्याएं पैदा होंगी। पुलिस ने फिर से कदम उठाया है और गिरफ्तारियां की गई हैं। इन सबके बीच जो पीड़ित हमारी सहानुभूति के पात्र हैं, उन पर ग्रहण लग गया है। एक्सल राडुकुबाना का नाम पीठासीन न्यायाधीश द्वारा पहले ही प्रकट कर दिया गया था क्योंकि उन्हें लगा कि सोशल मीडिया पर बहुत सारी अफवाहें हैं जो वर्तमान उथल–पुथल को बढ़ा रही हैं। दरअसल, अगर इस दुखद गाथा में कोई और दोषी है – तो वह गैर–जिम्मेदार लोग हैं जो असत्यापित संदेशों को अग्रेषित कर रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं कि उन सोशल मीडिया प्रदाताओं के खिलाफ भी कुछ कार्रवाई की योजना बनाई जाएगी जिन्होंने इस तरह की बड़े पैमाने पर फर्जी खबरों को फैलने की इजाजत दी है। इस बीच ष्नकलीष का भी अच्छा उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए हालिया रहस्योद्घाटन कि एक बिल्ली एक अकादमिक के रूप में अभिनय कर रही थी! लैरी बिल्ली को दो निडर विद्वानों द्वारा लैरी रिचर्डसन, एक सम्मानित अकादमिक, जिन्होंने कई पेपर प्रकाशित किए थे, का (नकली) व्यक्तित्व दिया गया था – जब उन्हें एहसास हुआ कि फर्जी पेपर प्रकाशित करके अन्य शिक्षाविदों को बढ़ावा देने के लिए धोखेबाजों द्वारा ळववहसमष बीवसंत का दुरुपयोग किया जा रहा था। रीज रिचर्डसन और निक वाइज, दोनों ने अपनी दादी की बिल्ली के इर्द–गिर्द एक नकली पहचान बनाकर सिस्टम में अंतर का पता लगाने और उसे उजागर करने का फैसला किया। इसलिए प्लैरी रिचर्डसनष के रूप में बिल्ली को अपने स्वयं के शोधपत्र प्रकाशित करने के अलावा, अन्य शिक्षाविदों द्वारा भी उद्धृत किया गया था। ऐसा लगता है कि इंटरनेट पर हर चीज के बारे में वास्तव में सावधान रहना होगा! और इस बीच – मौसम बहुत अच्छा है – लगभग हर दिन सूरज चमक रहा है। इस दुखद समय में यह कुछ राहत ला रहा है – पर्यटकों की भीड़ बिना किसी डर के लंदन आ रही है। और हम जानते हैं कि गर्मी सचमुच आ गई है जब नेकलाइन गिरती है और हेमलाइन बढ़ती है – और हर कोई साइकिल पर कहीं जा रहा है।और जो लोग कहीं नहीं जाना चाहते, उनके लिए आनंद लेने के लिए कला और प्रदर्शन हमेशा उपलब्ध हैं। थिएटर शो हाउसफुल चल रहे हैं – जो थोड़ा विवादास्पद हो गया है वह नोबेल पुरस्कार विजेता एनी एर्नाक्स के उनके जीवन के बारे में उपन्यास पर आधारित है। कुछ लोगों को यह नाटक इतना ष्कच्चाष लगा कि एक दृश्य के दौरान जब गर्भपात किया जाता है तो पुरुष बेहोश हो जाते हैं। दशकों से एनी के जीवन को दर्शाते हुए, प्रत्येक अनुभाग को एक अलग अभिनेत्री द्वारा नियंत्रित किया जाता है। यह प्रारूप नया नहीं है (जैसा कि मुझे सिल्विया प्लाथ पर एक समान नाटक में अभिनय करना और इस्मत चुगताई के जीवन पर इसी तरह का एक नाटक लिखना याद है) लेकिन निश्चित रूप से – क्योंकि सामग्री पुरुषों को पछाड़ने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है – महिलाएं इसे पसंद कर रही हैं।

वायु प्रदूषण और मृत्यु दर

क्या भारतीय राजनीति ने विज्ञान की अनदेखी कर दी है? केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल का हाल ही में दिया गया बयान, जिसमें उन्होंने वायु प्रदूषण और मृत्यु दर तथा बीमारी के बीच किसी संबंध को नकार दिया है, इस तरह की अनदेखी का संकेत देता है। राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में सुश्री पटेल ने जोर देकर कहा कि इस विषय पर निर्णायक डेटा की अनुपस्थिति के कारण वायु प्रदूषण और मृत्यु या बीमारियों के बीच सीधा संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता है। मंत्री ने आगे कहा कि वायु प्रदूषण श्वसन संबंधी बीमारियों और संबंधित स्थितियों के लिए कई ट्रिगर्स में से एक हैय अन्य कारण तत्वों में व्यक्तिगत आदतें, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, चिकित्सा इतिहास और प्रतिरक्षा शामिल हैं। सुश्री पटेल की अज्ञानता की पुष्टि प्रमुख वैश्विक अध्ययनों के अस्तित्व से होती है, जिन्होंने भारत की हवा में पीएम 2.5 की उपस्थिति के घातक परिणामों की पहचान की है। स्विस वायु गुणवत्ता निगरानी निकाय एफ।पत के अनुसार, भारत अब 134 देशों में तीसरा सबसे प्रदूषित देश है और 50 सबसे प्रदूषित महानगरों में से 42 यहीं हैं। जहां तक ध्वायु प्रदूषण का मृत्यु दर से संबंध का सवाल है, पिछले महीने प्रकाशित लैंसेट अध्ययन से पता चला है कि 10 भारतीय शहरों – जिनमें कलकत्ता भी शामिल है – में वार्षिक मौतों में से 7.2: को अल्पकालिक पीएम 2.5 के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। विडंबना यह है कि भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित एक अध्ययन, जो स्वयं केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अधीन कार्य करता है, ने 2019 में 1.7 मिलियन मौतों – उस वर्ष कुल मौतों का 18: – वायु प्रदूषण के कारण बताई थी। प्रतिष्ठित वैश्विक और राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा उद्धृत इन आंकड़ों ने सत्तारूढ़ दल के कुछ सदस्यों की आंखें नहीं खोली हैं। वास्तव में, सुश्री पटेल इस तरह के अवैज्ञानिक विचारों को मानने वाली एकमात्र नेता नहीं हैंरू 2019 में, तत्कालीन केंद्रीय पर्यावरण मंत्री हर्षवर्धन ने मृत्यु प्रमाण पत्रों का हवाला देते हुए इसी तरह की आवाज उठाई थी, इसका ध्यान उन बड़े उत्सर्जकों पर नहीं है जो मृत्यु दर में वृद्धि के लिए जिम्मेदार हैं। न केवल पीएम स्तर से अधिक होने के दोषी शहरों द्वारा स्वच्छ वायु कार्य योजनाओं का कार्यान्वयन अनियमित रहा है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण डेटा की कमी के कारण एनसीएपी भी बाधित रहा है। लेकिन फिर, एनसीएपी के खराब क्रियान्वयन की उम्मीद उस सरकार से की जा सकती है जिसके प्रतिनिधि इस बात से इनकार करते हैं कि वायु प्रदूषण से मृत्यु हो सकती है।

विभाजनकारी राजनीति से दूर रहें

ललित

गीतार्थ पाठक द्वारा शायद भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा किसी अन्य राजनेता में शब्दों को इतनी तेजी से जोड़ने की चतुराई नहीं है कि वह जो कुछ भी कहते हैं उसका विपरीत अर्थ दे सकें। उनकी इस टिप्पणी के बाद कि विपक्षी कांग्रेस महिलाओं के मंगलसूत्र सहित भारतीयों की संपत्ति छीनने और इसे घुसपैठियों को देने की योजना बना रही है, जिनके अधिक बच्चे हैं, जिससे विवाद पैदा हो गया और विपक्षी दलों ने प्रधानमंत्री की आलोचना की। इसके अर्थ में मोड़ दे दिया. एक साक्षात्कार में कहा, मुझे चिंता है कि अधिक बच्चों वाले लोगों के बारे में टिप्पणी केवल मुसलमानों से कैसे जुड़ी है! वे मुसलमानों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं? यह हमारे देश में गरीब परिवारों की स्थिति है। मोदी अपने शब्दों को जो भी मोड़ देना चाहते थे, लक्षित दर्शक समझ गए कि उनके शब्द मुसलमानों की ओर इशारा करते हैं। हालाँकि मोदी की पार्टी और सरकार ने व्यावहारिक रूप से तथाकथित घुसपैठियों और अधिक बच्चे पैदा करने वाले लोगों को श्सबश शब्द से बाहर कर दिया है, लेकिन मोदी का नारा, सबका साथ, सबका विकास, सभी के लिए समृद्धिष का वादा करता है और जारी है। सरकारी कक्ष से प्रतिध्वनि. कोई लाभांश नहीं आम चुनावों के दौरान टर्बोचार्जिंग इस्लामोफोबिया भाजपा को बेहतर चुनावी लाभ नहीं दे सका। पीएम ने आरोप लगाया कि कांग्रेस चाहती थी कि मुस्लिम ष्वोट जिहादष में शामिल हों और वह अयोध्या में बाबरी मस्जिद के खंडहरों पर बने राम मंदिर को बंद करने की योजना बना रही थी। राजनीतिक पर्यवेक्षकों और विश्लेषकों ने सोचा कि लोकसभा चुनावों में झटका लगने के बाद सत्तारूढ़ दल अपनी इस्लाम विरोधी बयानबाजी कम कर देगा। हालाँकि, यह एक भ्रम था क्योंकि ये नेता अब भी इस्लाम विरोधी विषय पर फिर से विचार करते रहते हैं। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और मध्य प्रदेश सरकार के हालिया निर्देशों में शांतिपूर्ण और व्यवस्थित तीर्थयात्रा सुनिश्चित करने के लिए कांवर यात्रा मार्ग पर भोजनालयों को मालिकों के नाम और पहचान प्रदर्शित करना अनिवार्य है, जो भाजपा के निरंतर अल्पसंख्यक विरोधी रुख का एक और उदाहरण है। सौभाग्य से, सुप्रीम कोर्ट ने अपने अंतरिम आदेश में निर्देशों पर रोक लगा दी। केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह, जो मोदी सरकार के पहले दो कार्यकाल में तेजी से आगे बढ़े हैं और जो समय–समय पर मुसलमानों के खिलाफ जहर उगलते रहते हैं, ने हाल ही में कहा, "मुसलमानों को यहां रहने देना सबसे बड़ी गलती थी। अगर देश का बंटवारा धार्मिक आधार पर हुआ था तो मुसलमानों को यहां रहने की इजाजत क्यों दी गई? अगर उन्हें यहां रहने की अनुमति नहीं दी गई होती तो यह स्थिति नहीं बनती।" एक कदम आगे बढ़ते हुए, पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी ने उसी दिन कोलकाता में एक पार्टी बैठक में सत्तारूढ़ भाजपा के अल्पसंख्यक सेल को खत्म करने और ष्सब का साथष के नारे को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। , सबका विकास।" सरकार के अपने आंकड़ों के अनुसार, भारत के सभी प्रमुख धार्मिक समूहों के बीच मुस्लिम प्रजनन दर में सबसे तेज गिरावट देखी जा रही है मोदी के भरोसेमंद मुख्यमंत्रियों में से एक, असम के हिमंत बिस्वा सरमा और झारखंड में आगामी राज्य विधानसभा चुनावों के लिए भाजपा के सह–प्रभारी ने हाल ही में झारखंड में कहा कि संथाल परगना के आदिवासी बहुल क्षेत्र की पूरी जनसांख्यिकी तेजी से बदल रही है। वहां अनियंत्रित बांग्लादेशी मुसलमानों के लिए श्लव जिहादश और श्लैंड जिहादश तक। उन्होंने आरोप लगाया कि बांग्लादेशी मुसलमान उनकी जमीन और पैतृक संपत्ति हड़पने के लिए आदिवासी लड़कियों से शादी कर रहे हैं। उन्होंने रांची में यह भी कहा कि असम में मुस्लिम आबादी आज 40 फीसदी तक पहुंच गयी है. उनके अनुसार 1951 में यह 12 प्रतिशत थी। उन्होंने कहा कि असम के कई जिले मुसलमानों के हाथ से निकल गए हैं और यह उनके लिए कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं बल्कि जीवन और मृत्यु का मामला है। हालाँकि, तथ्य यह है कि, भारत की पहली जनगणना 1951 के अनुसारय असम में मुसलमानों की

जनसंख्या 24.68: थी। उन्होंने यह चेतावनी देकर एक और विवाद खड़ा कर दिया कि असम 2041 तक मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा। उन्होंने किसी भी जनगणना के आंकड़ों का हवाला दिए बिना ऐसा कहा, क्योंकि देश में 2021 की जनगणना अभी तक नहीं हुई है। डेटास्पीक प्रधान मंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा धार्मिक अल्पसंख्यकों का हिस्सा– एक क्रॉस–कंट्री विश्लेषण (1950 –2015) शीर्षक से एक वर्किंग पेपर लोकसभा चुनाव से ठीक पहले प्रकाशित किया गया था, जिसके समय पर सवाल उठाए गए थे। रिपोर्ट में कहा गया है कि 1950 से 2015 के बीच देश में हिंदू आबादी की हिस्सेदारी 7.82 प्रतिशत घट गई, जबकि मुसलमानों की हिस्सेदारी 43.15 प्रतिशत बढ़ गई, जिससे पता चलता है कि देश में विविधता को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल माहौल है। रिपोर्ट में भारत की ष्उत्पीड़ित आबादी को शरण देने की सभ्यतागत परंपराष की सराहना की गई है। यह एसोसिएशन ऑफ रिलिजन डेटा आर्काइव (एआरडीए) के आंकड़ों पर निर्भर था, जो वैश्विक धार्मिक डेटा का एक मुफ्त ऑनलाइन डेटाबेस है, न कि दशकीय राष्ट्रीय जनगणना पर, जो आखिरी बार 2011 में आयोजित की गई थी। भाजपा के आख्यानों के विपरीत, सरकार के अपने आंकड़ों के अनुसार, भारत में सभी प्रमुख धार्मिक समूहों के बीच मुस्लिम प्रजनन दर में सबसे तेज गिरावट देखी जा रही है।

राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन हेतु प्रचार वाहन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश तृतीय/सचिव पूर्णकालिक, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रशांत कुमार सिंह ने अवगत कराया है कि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निर्देशानुसार तथा माननीय जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कुशल निर्देशन में 14 सितम्बर 2024 को राष्ट्रीय लोक अदालत आयोजित की जा रही है। राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन हेतु एवं व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु मोबाईल वैन को अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश तृतीयध सचिव पूर्णकालिक, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जौनपुर प्रशांत कुमार सिंह द्वारा जनपद न्यायालय परिसर में हरी झण्डी दिखाकर जनपद जौनपुर के विभिन्न तहसीलों के लिये रवाना किया गया। इस प्रचार वाहन द्वारा आज तहसीलों व अन्य विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय लोक अदालत के सम्बन्ध ा में व्यापक प्रचार–प्रसार एवं जनता को जागरूक किया जायेगा। यह प्रचार वाहन रूट मैप के अनुसार जनपद के तहसील क्षेत्रों एवं अलग–अलग विभिन्न क्षेत्रों में जाकर राष्ट्रीय लोक अदालत के सम्बन्ध में प्रचार–प्रसार करेगा। वाहन में राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जारी पम्पलेट सहित विधिक साक्षरता सम्बन्धित बुकलेट सामग्रियां वितरित की जायेगी।

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

अयोध्या। गुरुवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ब्लॉक मसौधा मे नोडल टीचर और आशाओं का राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम पर अधीक्षक डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।उन्हें यह प्रशिक्षण 10 अगस्त को एक साल से दो साल के बच्चों को आधी गोली और दो साल उन्नीस साल के बच्चों को पूरी गोली खिलाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने के लिये दिया गया।इस मौके पर उन्होंने बताया कि जो बच्चे बीमार हैं या कोई दवा ले रहें हैं उनको ये दवा नहीं खिलाना है।ऐसे बच्चों को बाद मे चलाये जा रहे अभियान 14 अगस्त के दौरान खिलाएंगे। इस मौके पर काउंसलर सत्यबोध ने बताया कि सभी लोग समय से रिपोर्टिंग करें। ब्लॉक मोबिलाइजर कोर्डिनेटर यूनिसेफ धीरेन्द्र नाथ पाण्डेय द्वारा टीकाकरण से इंकार बच्चों को टीकाकरण करवाने मे सभी नोडल टीचर का सहयोग माँगा। उन्होंने कहा कि माह जुलाई ब्लॉक मे कुल इंकार,उदासीन, झिझक वाले 277 बच्चों को चिन्हित किया गया था। जिनमे से 163 बच्चों को कोई न कोई टीका लगना था।

जिनमे से 88 बच्चों को टीका लगा जो 54: रहा।इस अवसर पर ब्लॉक एजुकेशन अधिकारी शैलेन्द्र कुमार द्वारा सभी नोडल टीचर आशा,एएनएम,आशा संगिनी के साथ साथ सुपरवाइजर के कार्यो की सराहना किया गया। वही इस मौके पर विशेष सहयोग प्रतिनिधि स्वास्थ्य अमिताभ सिंह,ब्लॉक कम्युनिटी प्रोसेस मैनेजर अर्चना सिंह मौजूद रहे।

पेंशनर्स एसोसिएशन की मासिक बैठक सम्पन्न

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। सेवानिवृत्त कर्मचारी एवं पेंशनर्स एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के जनपद शाखा की मासिक बैठक कलेक्ट्रेट परिसर स्थित पेंशनर्स कार्यालय मे जनपद अध्यक्ष सी बी सिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई।

बैठक को संबोधित करते हुए अध यक्ष ने प्रदेश स्तर पर हो रहे संगठनात्मक कार्यो को बताते हुए स्थानीय स्तर की समस्याओ से अवगत कराने के लिए सदस्यगण से अपेक्षा किया। तत्पश्चात बैठक मे उपस्थित पेंशनर्स ने अपने सम्बोधन मे जनपद स्तर पर चिकित्सा प्रतिपुर्ति के देयो को समय से निस्तारण न होने से चिकित्सा प्रभावित होने की समस्या रखा, जिस पर बैठक मे ऐसे कार्यालयाध्यक्षो के लिए निन्दा प्रस्ताव पारित करते हुए ,आगे चिन्हित अधि ाकारियो के विरुद्ध संगठनात्मक कार्यवाही का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही सरकार के स्तर पर पेंशनर्स की लम्बित समस्या यथा 18 माह के बकाए महगाई राहत, पैसठ सत्तर पचहत्तर बर्ष पर क्रमशः पांच दस पन्द्रह प्रतिशत पेंशन वृद्धि के संसदीय समिति की संसृति को लागू करने, रेल किराए की स्थगित योजना को बहाल करने, पेंशन को आयकर से मुक्त करने, चिकित्सा प्रतिपूर्ति के स्थान पर इन डोर की भांति आउट डोर चिकित्सा को भी कैशलेस करने आदि को शीघ्र पूरी करने की मांग की गई। बैठक को मुख्य रूप से नरेंद्र त्रिपाठी, राम आश्रय, राम केश यादव, कंचन सिंह, कृष्ण कुमार त्रिपाठी, कृ पाशंकर उपाध्याय, मंजूरानी राय,कान्ति सिंह, प्रमोद तिवारी,ओमप्रकाश सिंह, राम सूरत यादव, शम्भू नाथ यादव, शेष नाथ सिंह, महेन्द्र पाठक, दिनेश कुमार सिंह, दसरथ राम, गोरखनाथ नाथ माली ,प्रमोद कुमार सिंह, आत्मा राम वर्मा आदि ने सम्बोधित किया। अन्त मे अध्यक्ष ने सभी के प्रति आभार प्रकट करते हुए बैठक समाप्त किया। बैठक का संचालन राम अवध लाल ने किया।

कृषि उद्यम से बढ़ेगी किसानों की आय – डा. रमेश चंद्र

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी) सिद्दीकपुरपुर में गुरुवार को एग्री जंक्शन लाभार्थियों के 13 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि कृ षि उद्यम से किसानों की आमदनी बढ़ेगी इसके लिए सरकार द्वारा कई महत्वाकांक्षी योजनाएं चलाई जा रही है। मुख्य अतिथि जिला कृषि अधि ाकारी विनय सिंह ने दीप प्रज्वलित कर प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किए तथा विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दिए।

लाभार्थियों को संबोधित करते हुए उप परियोजना निदेशक (आत्मा) डा. रमेश चंद्र यादव ने कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने एवं कृ षि स्नातकों को स्वावलंबी बनाने के लिए सरकार प्रशिक्षित उद्यमी स्वावलंबन (एग्रीजंक्शन) योजना के तहत बेरोजगार कृषि स्नातकों को प्रशिक्षित कर रही है, उन्हें बीज खाद एवं रसायन के लाइसेंस के साथ बैंक से रुपये पांच लाख ऋण का ब्याज और एक साल तक का दुकान का किराया कृषि विभाग द्वारा दिया जा रहा है। जनपद के प्रत्येक ब्लॉक में एग्री जंक्शन केंद्र खोले जा रहे हैं जहां किसानों को एक ही छत के नीचे उचित परामर्श के साथ कृ षि निवेश के सारे सामान एक ही जगह पर सुगमता से उपलब्ध हो जाएंगे।

उन्होंने कहा कि कृषि से जुड़े उद्योगों डेयरी पशुपालन, पोल्ट्री पर सरकार का विशेष जोर है इसके लिए सस्ते और अन्य संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाई जा रही है। श्वेत व नीली क्रांति के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है।

अपर जिला कृषि अधिकारी रविन्द्र कुमार ने बीज एवं उर्वरक लाइसेंस बनाने की जानकारी दिया। अंत में आभार ज्ञापन वरिष्ठ संकाय अभिषेक दुबे ने किया।

इस मौके पर संस्थान निदेशक उपेन्द्र कुमार, संकाय श्रवण कुमार, जगदीश गौर, अजित सहित चयनित 58 एग्री जंक्शन लाभार्थी मौजूद रहे।

कांग्रेस ने हमेशा भारत को तोड़ने वाली विचार धारा को पाला पोसा है – शंकर लाल लोधी

हरदोई(अंबरीष कुमार सक्सेना)

भारतीय जनता पार्टी कार्यालय पर हर घर तिरंगा यात्रा कार्यक्रम पर संपन्न हुई प्रेस वार्ता में जिलाध्यक्ष अजीत सिंह बब्बन एवं जिला प्रभारी शंकर लाल लोधी ने १५ अगस्त से पूर्व होने वाले पार्टी कार्यक्रमों को साझा किया। पत्रकार वार्ता में जिला प्रभारी ने बताया कि सभी मंडल और बूथ पर 9 और 10 तारीख में बैठक करके स्वतंत्रता के उत्सव को मनाना है। अपने आस पास के सभी घरों पर तिरंगा का सम्मान करते हुए फहराना है। वहीं 11 और 12 अगस्त में युवा मोर्चा के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा का आयोजन होना तय हुआ है। दिनांक 13, 14 एवं 15 अगस्त में सभी पार्टी पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि और कार्यकर्ता भारत माता और वीर सपूतों की प्रतिमाओं के आसपास स्वच्छता अभियान चलाकर उनका माल्यार्पण करते हुए सम्मान करना सुनिश्चित करेंगे। पत्रकार वार्ता में पड़ोसी देश के हालातों के प्रश्न पर बोलते हुए जिला प्रभारी ने कहा कि विश्व में कट्टरपंथी ताकतों के हौसले बुलंद हो रहे है। विकासशील देशों की आर्थिक प्रगति को कुछ लोग पचा नहीं पा रहे है। इसी कारण कुछ शक्तियां कट्टरपंथियों को दाना पानी देकर विकासशील देशों में दंगे फसाद करवाकर माहौल खराब करवा रहे है। भारत सरकार इन सभी कृत्यों पर अपनी नजर बनाए हुए है। 140 करोड़ जनता के विश्वास का समर्थन प्रधानमंत्री मोदी के साथ है। वहीं जिला प्रभारी ने कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद के आपत्तिजनक बयान की कठोर निंदा करते हुए कहा कि कांग्रेस ने हमेशा भारत को तोड़ने वाली विचार धारा को पाला पोसा है। वह अखंड भारत की अवधारणा को कभी नहीं मानेंगे। पूर्व विदेश मंत्री का बयान देश के माहौल को खराब करने और उकसाने वाला है। भारत के लोकतंत्र की जड़े बहुत गहरी है और भारत का नागरिक सहिष्णु है।

'किशोर मंच कार्यक्रम के अंतर्गत छात्राओं को स्वास्थ्य के प्रति किया जागरूक'

'ब्यूरो रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव'

'पाली–(हरदोई)' पाली नगर स्थित सेठ बाबूराम भारतीय इण्टर कॉलेज में राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाली की डॉ मालती शुक्ला ने सर्वप्रथम किशोर–किशोरियों के स्वास्थ्य पर चर्चा की। उन्होंने मंच के माध्यम से छात्रध छात्राओं को किशोर स्वास्थ्य के बारे में जानकारी दी गई और साथ ही छात्राओं को शारीरिक व मानसिक समस्याओं को लेकर अपनी झिझक को तोड़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान उन्हें शारीरिक बदलावों से परिचित कराते हुए किशोरावस्था में होने वाली समस्याओं से भी अवगत कराया।इसके साथ ही निराकरण की भी जानकारी दी गई। आपको बता दें कि गुरुवार को कालेज में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने सबसे पहले छात्रध्छात्राओं के स्वास्थ्य की जाँच की। इस दौरान डॉ रघुनाथ अग्निहोत्री ने बताया कि राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत 10 से 19 वर्ष तक के किशोरध किशोरियों को स्वास्थ्य केंद्रों के माध यम से समुदाय स्तरीय सेवाएं प्रदान की जाती हैं।इस कार्यक्रम के अंतर्गत शिशु मृत्यु दर एवं कुल प्रजनन दर को कम करने के लिए किशोर प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य को एक मुख्य घटक माना गया है।जिससे इसको मुख्य धारा में जोड़ा जा सके।इसके अंतर्गत स्वास्थ्य उन्नयन,किशोरों में पोषण,आकस्मिक चोट, हिंसा (लिंग आधारित) असंक्रमणकारी रोग,मानसिक स्वास्थ्य

पर जानकारी तथा सलाह देना है। डॉ मालती शुक्ला ने किशोरावस्था के दौरान किशोर–किशोरियों की मानसिक स्थिति पर चर्चा करते हुए पढ़ाई के दौरान होने वाले चिड़चिड़ापन,समस्याओं से परिजनों एवं गुरुजनों को अवगत करने के बारे में बताया। किशोरियों को शारीरिक व व्यावहारिक परिवर्तन के दौरान सजग होकर रहने की सलाह के साथ उन्हें सैनिटरी पैड वितरित कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत मेहंदी डिजाइन प्रतियोगिता में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने तीन छात्राओं में सरगम गुप्ता प्रथम,शायस्ता द्वितीय, उमे सलमा तृतीय को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के दौरान स्वास्थ्य टीम में डॉक्टर रघुनाथ अग्निहोत्री, डॉ मालती शुक्ला स्टाफ नर्स विनीता, स्टाफ नर्स पूनम, नेत्र सहायक ललित कुमार,नेत्र सहायक सचिन के अतिरिक्त इतिहास प्रवक्ता विनोद प्रताप वर्मा,विषय विशेषज्ञ संजय कुमार रस्तोगी मौजूद रहे।

अपनी ही राइस मिल में मिल मालिक ने लगाया फांसी मौत

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। सिकरारा थाना क्षेत्र के गुलजारगंज बाजार स्थित एक राइस मिल में उसके मालिक का फंदे पर लटकता शव देख वहाँ सनसनी फैल हई। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर पंचनामा करते हुए विधिक कार्रवाई में जुट गईं।

थाना क्षेत्र के टेकारी (डिहिया)गांव निवासी राकेश सिंह (50) की उसके घर से लगभग 400 सौ मीटर दूर गुलजारगंज बाजार में राइस मिल है। वृहस्पतिवार की सुबह लगभग 8 बजे उक्त राइस मिल में सीलिंग फैन पर रस्सी के सहारे मालिक का शव लटकता देख वहां सनसनी फैल गई।आननफानन में शव उतारकर स्थानीय चिकित्सक को दिखाया गया। उन्होंने उन्हें मृत घोषित कर दिया।लोगों के अनुसार ज्यादा कर्ज के बोझ के चलते वह कुछ दिनों से परेशान दिख रहे थे। कर्ज देने वाले लगातार पैसा अदा करने का दबाव बना रहे थे जिसे वह नहीं झेल पाए और अपनी जान दे दी।

घटना की सूचना मिलने पर मृतक की पत्नी पूर्णिमा सिंह व घर के अन्य सदस्य रोते बिलखते मौके पर पहुँच गए।मृतक के दो बेटी एक बेटा है,बड़ी बेटी की शादी हो चुकी है जबकि छोटी बेटी कानपुर में पढ़ाई कर रही है जबकि बेटा आकाश सिंह लखनऊ में पढ़ाई कर रहा है। वह पिता के मौत की सूचना पर घर के लिए चल दिया है।मृतक के छोटे भाई राजेश सिंह की सूचना पर थाने के उपनिरीक्षक दद्दन सिंह मयफोर्स मौके पर पहुँचकर शव को कब्जे में लेते हुए शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को भेज दिए।

जौनपुर के मेडिकल कालेज में अब पीजी की भी होगी पढ़ाई

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय (मेडिकल कालेज) के एमबीबीएस छात्रों के लिए राहत भरी खबर है। अब वे इसी सत्र से बायोकेमिस्ट्री और एनाटोमी में पीजी कर सकेंगे। नेशनल मेडिकल काउंसिल (एनएमसी) द्वारा दोनों विभागों में तीन – तीन सीटों के लिए आदेश जारी होने से मेडिकल की पढ़ाई करने वाले छात्र उत्साहित है। कालेज प्रशासन ने सरकार के निर्णय से मेडिकल कालेज के भविष्य की संभावनाए और भी प्रबल हो गयी है। यह कदम न केवल वर्तमान छात्रों को लाभान्वित करेगा बल्कि भविष्य के विद्यार्थियों के लिए भी एक प्रेरणा बनेगा। मेडिकल कालेज में पीजी की पढ़ाई के लिए बायोकेमिस्ट्री और एनाटोमी में तीन तीन सीटों की व्यवस्था एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक विकास है। नया मेडिकल कालेज होने बावजूद चौथी बैच शुरू होने जा रही है। जो कालेज की तेजी से प्रगति और उत्कृ ष्टता की दिशा में उठाये गए कदमों का प्रमाण है। मेडिकल कालेज के सीएमएस एए जाफरी ने बताया कि इससे छात्रों की काफी सुविधा होगी।

11 से 13 अगस्त को प्रत्येक विधानसभा में तिरंगा यात्रा युवा मोर्चा के कार्यकर्ता बाइक रैली निकालेंगे – सुशील त्रिपाठी

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। भारतीय जनता पार्टी द्वारा गुरुवार को पार्टी कार्यालय पर आगामी 15 अगस्त की तैयारी को लेकर हर घर तिरंगा कार्यक्रम और तिरंगा यात्रा जैसे महत्वपूर्ण विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। अध यक्षता जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय महामंत्री सुशील त्रिपाठी एव विशिष्ट अतिथि के रूप मे जिला प्रभारी अशोक चौरसिया रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण कर की गई।

मुख्य अतिथि क्षेत्रीय महमंत्री सुशील त्रिपाठी ने कहा कि कई वर्षों से बड़े ही हर्षोल्लास के साथ राष्ट्र की एकता एवं अखंडता के साथ संकल्प व प्रतिबद्धता के साथ स्वतंत्रता दिवस को हर घर तिरंगा और तिरंगा यात्रा सहित विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित करते चले आ रहे हैं ।हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मन की बात कार्यक्रम के 112वे संस्करण में कहा कि 15 अगस्त का दिन अब दूर नहीं है अब 15 अगस्त को घर–घर तिरंगा अभियान चला कर इस कार्य को पूर्ण करना पार्टी की प्राथमिकता है पार्टी ने उत्तर प्रदेश में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के दिन हर घर तिरंगा के संकल्प के साथ अभियान की विस्तृत कार्य योजना तैयार अभियान हेतु जिला स्तर पर 8 अगस्त को कार्यशाला आयोजित की है। इसके साथ 8 और 9 अगस्त को मंडल स्तर पर बैठक आयोजित की जाएगी। जिसमें बूथ स्तर पर तिरंगा अभियान को सफल बनाने के कार्य योजना पर चर्चा की जाएगी पार्टी ने निर्णय लिया है कि 11, 12 व 13 अगस्त को प्रत्येक विधानसभा में तिरंगा यात्रा युवा मोर्चा के कार्यकर्ता बाइक रैली निकालेंगे बड़ी संख्या में पार्टी की पदाधिकारी कार्यकर्ता स्थानीय नागरिकों के साथ मोटर साइकिल से हाथों में तिरंगा लेकर तिरंगा यात्रा निकलेंगे 12 से 14 अगस्त तक महापुरुषों की प्रतिमा एवं स्मारकों के आसपास स्वच्छता अभियान का कार्यक्रम चलाया जाएगा एवं अमर बलिदानियों व महापुरुषों के प्रतिमाओं पर माल्यार्पण करके पार्टी पदाधिकारी कार्यकर्ता और जनप्रतिनिधि कृतज्ञ नमन करेंगे।

जिला प्रभारी अशोक चौरसिया ने कहा कि 13, 14 व 15 अगस्त 2024 तक प्रत्येक कार्यकर्ता जन–जन से संपर्क करके प्रत्येक व्यवसायिक केंद्र पर हर घर तिरंगा फहराने से अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे पार्टी 14 अगस्त को विभाजन की विभीषिका स्मृति दिवस पर प्रत्येक जनपद में गोष्ठी का आयोजन करेगी तथा मौन जुलूस भी निकालेगी। इसके साथ विभाजन की विभीषिका को प्रदर्शित करती हुई प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। जिला केन्द्रो पर संगोष्ठी करते हुए विभाजन के काले अध्याय को याद करते हुए लाखों की संख्या में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम में पदाधिकारी बड़े पैमाने पर जगह–जगह सार्वजनिक कार्यक्रम में भाग लेंगे प्रत्येक बूथ के हर घर पर तिरंगा फहराया जाएगा।

जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह अभियान अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यह युवाओं के दिलों में देशभक्ति की भावना का और संचार करेगा, जो हमारे देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है यह हमारी एकता को प्रदर्शित करता है भारत एक है, भारत हमेशा एक रहेगा।

कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री सुशील मिश्रा ने की ।

पुरानी पेंशन का दायरा बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री को भेजा ज्ञापन

मृत्युंजय प्रताप सिंह पत्रकार

लखनऊ। राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के अध्यक्ष जे एन तिवारी ने आज प्रदेश के मुख्यमंत्री के आधि ाकारिक ईमेल आईडी पर एक पत्र भेज कर पुरानी पेंशन का दायरा बढ़ाने का अनुरोध किया है। उन्होंने अवगत कराया है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने भारत सरकार की तर्ज पर उन कर्मचारियों को पुरानी पेंशन की परिधि में ले लिया है जिनका विज्ञापन 1 अप्रैल 2005 से पहले निकाला गया था तथा नियुक्ति 1 अप्रैल 2005 के बाद हुई है। लेकिन अभी तक उत्तर प्रदेश सरकार ने उन कर्मियों को पेंशन के दायरे में नहीं लिया है, जो पहले पेंशनबल विभागों में कार्यरत थे और तकनीकी कारणों से त्यागपत्र देकर ऐसे विभागों में नियुक्ति प्राप्त कर ली जहां पर 1 अप्रैल 2005 के बाद पेंशन नहीं है। केंद्र सरकार ने ऐसे प्रकरणों पर विचार किया था। 11 जून 2020 को एक आदेश जारी कर ऐसे सभी कर्मियों को जो पहले पेंशनबल विभाग में थे और तकनीकी कारणों से त्यागपत्र देकर ऐसे विभागों में कार्यभार ग्रहण कर लिया है, जहां पर वर्तमान में पेंशन नहीं है, पुरानी पेंशन चुनने का विकल्प दिया है।राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद ने उत्तर प्रदेश सरकार से भी ऐसे प्रकरणों पर कार्यवाही करने का मुद्दा उठाया है। निवर्तमान मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हुई बैठक में पुरानी पेंशन के दायरे में दोनों प्रकार के कर्मचारियों पर सहमति बनी थी। सरकार ने पुरानी पेंशन का दायरा बढ़ाते हुए एक हिस्से का तो क्रियान्वन कर दिया है परंतु अभी दूसरे हिस्से का कार्यान्वयन बाकी है। केंद्र सरकार ने 29 अक्टूबर 2009 तक कार्यरत ऐसे सभी कर्मियों को पुरानी पेंशन की परिधि में लाने के लिए विकल्प का अवसर दिया है जिनकी नियुक्ति पहले पेंशनबल विभागों में थी लेकिन बाद में तकनीकी कारणों से त्यागपत्र देकर ऐसे विभागों में कार्यभार ग्रहण कर लिया है जहां 1 अप्रैल 2005 के बाद पेंशन है।सरकार ने अभी तक इस पर आदेश जारी नहीं किया है । जे एन तिवारी ने मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त किया है कि उन्होंने अप्रैल 2005 से पहले विज्ञापित पदों पर चयनित कर्मचारियों को पुरानी पेंशन की परिधि में ले लिया है लेकिन अभी तक उन कर्मियों पर आदेश होना बाकी है जिनको केंद्र सरकार ने तकनीकी कारणों के आधार पर पेंशन का लाभ दिया है। उत्तर प्रदेश सरकार में ऐसे कर्मचारियों की संख्या भी हजारों में जो पहले पेंशनबल विभागमें कार्यरत थे तथा बाद में त्यागपत्र देकर ऐसे विभागमें कार्यभार ग्रहण कर लिया, जहां पेंशन नहीं है। ऐसे कर्मियों की पुराने विभाग में की गई सेवाओं को जोड़ने, जीपीएफ को पुरानी पेंशन व्यवस्था के अनुकूल ही भुगतान किए जाने की मांग किया है।

केंद्रीय मूल्यांकन समन्वयक और सह समन्वयक को प्रशस्ति पत्र

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर से संबद्ध महाविद्यालयों के विषम सेमेस्टर परीक्षा शैक्षिक सत्र 2023–24 का केंद्रीय मूल्यांकन करने वाले समन्वयक डॉ. रामजीत सिंह व सह–समन्वयक डॉ. अनुराग मिश्र व डॉ. ममता सिंह को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए गुरुवार को कुलपति ने प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया है। इस अवसर पर डॉ. रामजीत सिंह ने कहा कि किसी भी विश्वविद्यालय के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य समय से छात्रों का प्रवेश ,परीक्षा, मूल्यांकन और फिर परीक्षा परिणाम होता है। यह हम सबके लिए गौरव की बात है कि कुलपति जी ने हमें इस महत्वपूर्ण कार्य में लगाया और उन्होंने हमें जो जिम्मेदारी दी उसे हमारी टीम ने पूरी निष्ठा और ईमानदारी से पूरा किया, इसके लिए मैं अपने सहयोगी सह–समन्नवयक डॉ. अनुराग मिश्रा व डॉ. ममता सिंह को बधाई देता हूं साथ ही मूल्यांकन में लगे सभी कर्मचारी बंधुओं को और पूरे स्टाफ को हार्दिक बधाई , जिनके सहयोग के बिना यह कार्य पूरा नहीं हो सकता था। सह–समन्नवयक डॉ. अनुराग मिश्र ने कहा कि कुलपति जी व परीक्षा नियंत्रक मूल्यांकन और परीक्षा परिणाम को लेकर संवेदनशील रहे और नियमित रूप से मूल्यांकन केंद्र पर पहुंचकर उचित मार्गदर्शन देते रहे।

सपा बाबा साहब अम्बेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिठाई लाल भारती ने जम्मू कश्मीर में पार्टी का किया विस्तार

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

लखनऊ। समाजवादी बाबा साहब अम्बेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिठाई लाल भारती ने जम्मू कश्मीर में पार्टी का विस्तार करते हुए वाहिनी के पदाधिकारियों की भी घोषणा की। सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव

में आस्था व्यक्त करते हुए जम्मू कश्मीर के सैकड़ो लोगों ने श्री भारती की उपस्थिति में सपा बाबा साहब अंबेडकर वाहिनी की सदस्यता ग्रहण की। श्री भारती ने अखिलेश यादव जी के निर्देश अनुसार डॉक्टर गुलाम नबी बंगू श्रीनगर व श्री निसार अहमद डार को राष्ट्रीय सचिव के पद पर नियुक्त किया। श्री भारती ने आशा व्यक्त की समाजवादी पार्टी में डॉ गुलाम नवी व निसार अहमद डार समाजवादी पार्टी की नीतियों को जन–जन तक पहुंचाएंगे व पार्टी विस्तार में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। यह जानकारी सपा बाबा साहब अंबेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय महासचिव राम बाबू सुदर्शन ने दी।

भव्य कांवड़ यात्रा शाहाबाद नगर के मुख्य मार्गो से निकाली गई

हरदोई (अंबरीष कुमार सक्सेना) गुरुवार को भव्य कांवड़ यात्रा शाहाबाद के मुख्य मार्गों से निकाली गई।फर्रुखाबाद पांचाल घाट से चलकर यात्रा अपराह्न करीब,12:30 शाहाबाद में प्रवेश हुई। इस कांवर यात्रा का नेतृत्व धर्मवीर यादव ने किया। यात्रा नगर मुख्य मार्गों से होते हुए शाहजहाँपुर मार्ग से होते हुए गोला गोकरननाथ मन्दिर के लिए प्रस्थान कर गई।जहाँ सभी श्रद्धालुओं ने महादेव पर जलाभिषेक किया। यात्रा में केसरिया ध्वज लहरा रहे थे। डीजे, ढोल–ताशे के अलावा गावों से आई श्रद्धालुओं की भीड़ कांवड़ यात्रा की शोभा बढ़ा रही थी। इस दौरान जगह जगह लोगों ने कांवड़ यात्रा का स्वागत किया। कांवड़ यात्रा में शामिल महिलाओं ने पीले

रंग की साड़ी पहनी जबकि पुरुष श्रद्धालु ओम नमः शिवाय की पोशाक में नजर आए।शोभा यात्रा का मुख्य आकर्षण डी जे पर बज रहे गीत और भजन रहे।जिनकी मनोहारी धुन पर कॉवड़िये झूम रहे थे। इस अवसर पर ई ओ राम रतन अंबेश,सभासद लक्ष्मीकांत त्रिपाठी ने कॉवरियों का अभिनंदन किया। सभासद रमाकांत मौर्य,रचित गुप्ता आदि ने नगर पालिका परिषद के द्वार के सामने सैकड़ों कांवड़ियों पर पुष्प वर्षा की तथा ठंडे जल के साथ स्वल्पाहार कराया ।इस कॉवर यात्रा की सुरक्षा के चाक चौबंद इंतजाम कोतवाली शाहाबाद पुलिस ने किये।

संक्षिप्त खबरें

सौ सैया संयुक्त चिकित्सालय कुमारगंज में सीएमओ डा. संजय जैन ने किया औचक निरीक्षण

(डॉ अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। सौ सैया संयुक्त चिकित्सालय कुमारगंज में मुख्य चिकित्सा अधिकारी सीएमओ डॉक्टर संजय जैन ने औचक निरीक्षण किया।इस मौके पर डॉ संजय जैन ने इमरजेंसी कक्ष का निरीक्षण कर ऑक्सीजन सप्लाई को चेक किया।रजिस्ट्रेशन कक्ष में डेली रजिस्टर चेक किया उपचार कक्षा में डॉक्टरों की मौजूदगी को देखा एवं उनसे भी कई प्रकार के सवाल जवाब किया डॉक्टर के जवाबों से संतुष्ट दिखाई दिए। वहीं मरीजों से उनका हाल–चाल जाना और किस तरह से उनका इलाज हो रहा है उनसे जानकारी लिया। वही मरीजों की भीड़ को देखते हुए ओपीडी का हाल जाना एवं तीमारदार और मरीजों खड़े होकर अपनी बारी का इंतजार करते देखा तो उनके बैठने के लिए अतिरिक्त कुर्सियों की व्यवस्था करने के निर्देश दिए और कई सुझाव दिए इसी बीच एक मरीज ने उनसे नाक कान गले के डॉक्टर अमित राय की शिकायत की और कहा डॉक्टर साहब बाहर की दवा लिखते हैं जो की बड़ी महंगी दवाई होती है। मरीज की शिकायत पर सीएमओ डॉ० संजय जैन डॉ० अमित राय को बुलाकर कड़ी फटकार लगाते हुए उनको भविष्य में ऐसा न करने की हिदायत दी। एवं अस्पताल के निरीक्षण में कई खामियां मिलने पर सीएमएस का कार्यभार देख रहे डॉक्टर तनुज को कई सुझाव दिएऔर कहा इन कमियों को जल्द से जल्द दूर करें जिससे मरीजों को किसी प्रकार की असुविधा न होने पाए।

छुट्टा जानवर से बाइक टकराने से दो घायल

(डॉ अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। रुदौली मार्ग पर रेलवे ओवरब्रिज के ऊपर सोमवार की देर रात्रि छुट्टा जानवर के अचानक आ जाने से बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई।जिसके बाद बाइक पर सवार दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।जानकारी के अनुसार रुदौली कोतवाली के नयागंज निवासी युवक अर्पित पुत्र राजेश अपने दोस्त आदित्य शर्मा पुत्र बलदेव शर्मा के साथ कही जा रहे थे जैसे ही ओवरब्रिज पर पहुँचे तभी अचानक छुट्टा जानवर के आ जाने के कारण बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई जिससे बाइक पर सवार दोनों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।दोनों घायलों को एंबुलेंस की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रुदौली पहुचाया गया।जहाँ बाइक सवार घायल युवक अर्पित पुत्र राजेश उम्र 17 वर्ष की हालत गंभीर देखते ही डॉक्टरो ने केजीएमयू मेडिकल कॉलेज लखनऊ रेफर कर दिया वहीं दूसरे युवक आदित्य शर्मा पुत्र बलदेव शर्मा को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया है।

देव स्थान के पास लगा गंदगी का अंबार शिकायत के बाद भी नहीं साफ हो सका नाला

(डॉ अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। विकास खंड मवई क्षेत्र के जबरवापुर मजरे बसौड़ी गांव में एक देव स्थान के बगल से गांव के पानी निकासी के लिए एक नाला का निर्माण करवाया गया है।इस समय उस नाले में गंदा पानी भरा हुआ है और वह जाम भी हो गया है। इस नाले की सफाई के लिए ग्राम प्रधान से लेकर विकास खण्ड और तहसील के अधिकारियों से मामले की शिकायत की गई है।

जिसमे ग्राम सचिव के द्वारा गलत तरीके से रिपोर्ट लगा दी गई हैं कि नाले की सफाई करवा दी गई हैं जबकि मौके पर एक भी सफाई कर्मचारी देखने तक भी नहीं गया है।जब इस संबंध में विकास अधिकारी मवई अनुपम कुमार वर्मा से बात की गई तो उन्होंने बताया कि गलत तरीके से रिपोर्ट लगाने वाले सचिव के विरुद्ध विधिक कार्यवाही की जाएगी और नाले की सफाई के लिए टीम गठित कर दी गई है जो मौके पर जा कर नाला की सफाई करेगी।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ 9 अगस्त को संयुक्त शिक्षा निदेशक कार्यालय पर करेगा मंडलीय धरना

(डॉ अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर 9 अगस्त को को विभिन्न शिक्षक समस्याओं के निस्तारण की मांग को लेकर मंडल अध्यक्ष अयोध्या, अरुण कुमार सिंह की अध्यक्षता में व जिला अध्यक्ष अयोध्या राजेश प्रताप सिंह के नेतृत्व में संयुक्त शिक्षा निदेशक कार्यालय अयोध्या में 1 बजे अपराहन से धरना दिया जायेगा, इसके उपरान्त 4 बजे मुख्यमंती को संबोधित सापन सौंपा जायेगा।

जिलाध्यक्ष राजेश प्रताप सिंह ने बताया कि पुरानी पेंशन योजन को बहाल किये जाने, तदर्थ शिक्षकों को विनियमित किये जाने, राज्य कर्मचारियों की भांति शिक्षकों को भी चिकित्सीय सुविधा दिये जाने, वित्त विहीन शिक्षकों को सम्मान जनक मानदेय दिये जाने, आमेलित विषय विशेषज्ञों को 2005 के पूर्व के विज्ञापन को देखते हुए पुरानी पेंशन योजना में शामिल किये जाने, एन०पी० एस० को अतिशीघ्र अपडेट किये जाने आदि मांगो को लेकर धरना दिया जायेगा जिलाध्यक्ष अयोध्या राजेश प्रतापसिंह, जिला संरक्षक भृगुनाथ शुक्ला, जिला मंत्री–यशवीर सिंह, कोषाध्यक्ष– राहुल देव वर्मा, चन्द्रशेखर सिंह, मनोज तिवारी, नितिन यादव, तिलकधारी, वृजेश दत्त द्विवेदी, श्रीप्रकाश, जगजीवन चतुर्वेदी, शिव प्रसाद आदि ने सभी सम्मानित शिक्षक साथियों से धरने में शामिल होने तथा धरने को सफल बनाने की अपील की है।

एचडीएफसी बैंक कर्मी की हत्या

सहारनपुर, संवाददाता। शव अर्धनग्न हालत में पड़ा मिला। मृतक की बाइक, बैग और पर्स गायब था। गले पर गहरी चोट के निशान मिले हैं। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज किया है। गंगोह निवासी अंकित (32) पुत्र भोपाल सिंह गंगोह में ही नानौता रोड स्थित एचडीएफसी बैंक के लोन डिपार्टमेंट में काम करता था। मंगलवार को वह ड्यूटी पर गया था। शाम पांच बजे बैंक से निकलने के बाद वह लापता हो गया। परिजनों ने रात नौ बजे तक इंतजार करने के बाद थाने पहुंचकर लापता होने की सूचना दी। पुलिस ने 24 घंटे इंतजार करने की बात कहकर परिजनों को वापस भेज दिया। बुधवार सुबह बैंककर्मी का शव नानौता क्षेत्र के गांव दादनपुर के पास बूंटा रजबहे के पुल के निकट पानी में पड़ा मिला। उसके शरीर के ऊपरी हिस्से पर कोई कपड़ा नहीं था। जेब से केवल मोबाइल मिला जो लॉक था। घंटों बाद मृतक की पहचान हो सकी। इसके बाद परिजनों को खबर दी गई। चोट के निशान देखकर लग रहा है कि गले पर वार किया गया है। मृतक का तीन साल का बेटा और पत्नी है। नानौता थाने पहुंचे पिता भोपाल सिंह का कहना था कि उनके बेटे की हत्या की गई है। हालांकि उन्होंने किसी से रंजिश होने से इंकार किया है। सीओ शशिप्रकाश शर्मा का कहना है कि परिजनों की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ हत्या की धाराओं में मामला दर्ज कर लिया गया है। जल्दी ही आरोपियों को गिरफ्तार कर खुलासा किया जाएगा।

हर घर तिरंगा– काकोरी ट्रेन एक्शन के शताब्दी समारोह के आयोजन पर हुई बैठक

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के कुलपति सभागार में हर घर तिरंगा एवं काकोरी ट्रेन एक्शन की 100 वीं वर्षगांठ के अवसर पर शताब्दी समारोह के आयोजन के संबंध में गुरुवार को कुलपति प्रो. वंदना सिंह की अध्यक्षता में बैठक आहूत की गई है।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के बलिदानियों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए 13 से 15 अगस्त के बीच श्हर घर तिरंगाश अभियान मनाया जाएगा। विश्वविद्यालय परिक्षेत्र के समस्त महाविद्यालय, सभी एन.एस.एस इकाइयां एवं रोवर्स रेंजर्स अपने अपने संस्थानों में इसकी जागरूकता के लिए व्यापक अभियान चलाएँ। इसका उद्देश्य प्रत्येक भारतीय के घर पर तिरंगा फहराकर देशभक्ति और एकता की भावना को सुदृढ़ करना है। कुलसचिव महेंद्र कुमार ने कहा कि हर घर तिरंगा एवं काकोरी ट्रेन एक्शन की 100 वीं वर्षगांठ के अवसर पर शताब्दी समारोह का आयोजन पूरे देश में मनाया जा रहा है। इस वर्ष भी यह अभियान विशेष रूप से

महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें अपने स्वतंत्रता संग्राम के नायकों के बलिदान की याद दिलाता है।

हर घर तिरंगा के नोडल अधिकारी प्रो. मनोज मिश्र ने कहा कि काकोरी ट्रेन एक्शन 100 वीं वर्षगांठ 9 अगस्त को मनाई जा रही है। यह घटना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक अमिट हस्ताक्षर है जिसका एकमात्र उद्देश्य सशक्त क्रांति के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेंकना और संघीय गणतंत्र संयुक्त राज्य भारत की स्थापना करना था। बैठक में राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. राज बहादुर यादव को निर्देशित किया गया कि स्वयंसेवकों को प्रेरित कर इस अभियान को सफल बनाएं । उच्च शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश शासन के अनुसार पूरे प्रदेश में क्रांतिकारियों के सम्मान में विविध कार्यक्रमों को आयोजित किया जाना है। इस अवसर पर सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों एवं आम जन को भी काकोरी ट्रेन एक्शन के सन्दर्भ में जानकारी देते हुए क्रांतिकारियों के बलिदान को पुनः याद कराया जाएगा। विश्वविद्यालय में 13 अगस्त से 15 अगस्त 2024 तक ष्हर घर तिरंगाष कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय के कार्यालयों, अमृत सरोवर और आवासीय परिसर पर तिरंगा लगाया जाएगा। इसके तहत विश्वविद्यालय में निबंध, लेख और भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। साथ ही विश्वविद्यालय औरआसपास में शहीदों के स्तंभ और प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर उनके बलिदान से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाएगा।

गणेश मार्केट, इंदिरा नगर के व्यापारी हुए एक जुट

व्यापारियों ने अपनी समस्याओं के समाधान के लिए गणेश मार्केट आदर्श व्यापार मंडल का किया गठन

अभिषेक राय– प्रभारी , आशुतोष राय – चेयरमैन, अमित सिंह –अध्यक्ष, शैलेंद्र प्रताप सिंह– महामंत्री, अनिल मल्होत्रा– कोषाध्यक्ष चुने गए

व्यापारियो के मान सम्मान एवं स्वाभिमान की रक्षा के लिए आदर्श व्यापार मंडल सदैव तत्पर – संजय गुप्ता

व्यापारियों को व्यापार के साथ–साथ हर विषय और मुद्दे पर होना होगा मुखर – संजय गुप्ता

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

लखनऊ। इंदिरा नगर क्षेत्र की गणेश मार्केट में व्यापारियों की एक बैठक आशा कंपलेक्स ,गणेश मार्केट इंदिरानगर में अपराहन 3:00 बजे आयोजित हुई। बैठक में उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष संजय गुप्ता मुख्य रूप से मौजूद रहे ,उनकी उपस्थिति में गणेश मार्केट के व्यापारियों ने अपनी समस्याओं के समाधान के लिए एकजुट होते हुए गणेश मार्केट आदर्श व्यापार मंडल का गठन किया। बैठक में सर्वसम्मति से अभिषेक राय को प्रभारी, आशुतोष राय को चेयरमैन, अमित सिंह को अध्यक्ष, शैलेंद्र प्रताप सिंह को महामंत्री, अनिल मेहरोत्रा को कोषाध्यक्ष अध्यक्ष चुना गया तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर शिव मूरत वर्मा, उपाध्यक्ष के पद पर अनुज मिश्रा, वरिष्ठ संगठन मंत्री के पद पर विशाल चौहान, संगठन मंत्री के पद पर आकाश बाबू सोनी को चुना गया तथा कार्यकारणी समिति के सदस्य के रूप में राजेश लोधी, आकाश वर्मा, प्रदीप चौहान ,विनोद वर्मा, डॉक्टर आरबी सिंह, देव वर्मा, मनु कुमार ,गुड्डू वर्मा ,रोहिणी श्रीवास्तव ,गीता सिंह सिम्मी कनौजिया, सुग्रीव शर्मा ,रामजस पासवान, अंसार अहमद योगेंद्र कुमार सिंह ,राहुल लोधी, राजेश लोधी, सुरेश राजपूत ,अंकुश यादव को चुना गया तथा इस अवसर पर गणेश मार्केट के वरिष्ठ व्यापारी दिनेश मिश्रा एवं संजय राय को संरक्षक के रूप में चुना गया चुने गए सभी पदाधिकारियों को नगर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमिताभ श्रीवास्तव द्वारा माला पहनकर संगठन की सदस्यता ग्रहण कराई गई। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष संजय गुप्ता ने कहा व्यापारियों के मान सम्मान एवं स्वाभिमान की रक्षा के लिए उत्तर प्रदेश आदर्श

व्यापार मंडल सदैव तत्पर है उन्होंने कहा व्यापारियों को संगठन के रहते किसी भी प्रकार का उत्पीड़न बर्दाश्त करने की आवश्यकता नहीं है संगठन उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर और समस्या के समाधान के लिए संघर्ष करेगा उन्होंने कहा व्यापारियों को व्यापार के साथ–साथ हर विषय और मुद्दे पर मुखर होना होगा तथा राजनीतिक गतिविधियों में भी शामिल होते हुए अपने आप को राजनीतिक रूप से भी मजबूत करना होगा तभी उनकी समस्याओं का समाधान होगा। इस अवसर पर संगठन के प्रदेश कोषाध्यक्ष मो.अफजल , प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष शेखर कुमार, मुंशी पुलिया के अध्यक्ष दीपक सिंह चौहान नगर उपाध्यक्ष धर्मेंद्र साहू संजय श्रीवास्तव प्रवीण मिश्रा विशेष रूप से मौजूद रहे।

पनकी पावर प्लांट चालू

कानपुर, संवाददाता। कानपुर में पनकी पावर प्लांट में पहले दिन 58 मेगावाट बिजली का उत्पादन हुआ, जिसे नेशनल ग्रिड पर भेजा गया। सोमवार देर शाम से शुरू हुई उत्पादन की प्रक्रिया मंगलवार की सुबह 4रू11 बजे पूरी हो गई। अब एक महीने तक कोल हैंडलिंग और एश हैंडलिंग प्लांट की टेस्टिंग होगी, जबकि अक्तूबर की शुरूआत तक प्लांट पूरी क्षमता से चलने लगेगा। पनकी में 660 मेगावाट क्षमता का पावर प्लांट तैयार किया गया है। यहां मार्च में बड़े और छोटे बॉयलर को लाइटअप (लाइट डीजल ऑयल को जलाया गया) किया गया था। इसके बाद ऑयल सिंक्रोनाइजेशन (तेल जलाकर बिजली पैदा करना) की तैयारी हुई, लेकिन किसी कारण पूरा नहीं हो सकी। सोमवार देर शाम ऑयल सिंक्रोनाइजेशन की प्रक्रिया चालू हुई और सुबह 4:11 बजे तक जारी रही। बिजली बनते ही अधिकारियों और स्टाफ के बीच खुशी का ठिकाना नहीं रहा। अब कोल फायरिंग (कोयला जलाकर बिजली बनाना) की जाएगी। प्लांट की पूरी प्रक्रिया डिजिटल तरीके से कार्य करेगी। इसके हर फंक्शन को कंट्रोल रूम से देखा जा सकेगा। कहां पर कौन सा उपकरण किस तरह से कार्य कर रहा है, इसका पता चल जाएगा।

बटन दबाकर प्लांट को चालू

कंट्रोल रूम में बैठे स्टाफ मॉनीटर की मदद से उसको संचालित कर सकेंगे। इससे पहले प्लांट के सीजीएम जीके मिश्रा ने प्लांट का बटन दबाकर उसे चालू किया था। प्रबंध निदेशक रणवीर प्रसाद, बीएचईएल के नवीन सक्सेना, वीरेंद्र सिंह, केके समेले, अजय द्विवेदी, मनोज चौधरी, पुनीत शर्मा आदि मौजूद रहे।

20 दिन में तैयार होगी कनवेयर बेल्ट

प्लांट में रेलवे की लाइन पहले ही पड़ गई थी, जबकि पिछले महीने कोयले की रैक लाने वाला इंजन भी आ गया था। अभी यहां पर रैक से कोयले को उतारने वाली कनवेयर बेल्ट को तैयार किया जा रहा है। अधिकारियों के मुताबिक यह 18 से 20 दिन में बन जाएगा।

एयरोप्लेन की तकनीक पर चलता टरबाइन

सीजीएम जीके मिश्रा ने बताया कि प्लांट में सबसे महत्वपूर्ण टरबाइन, जेनरेटर और बॉयलर रहता है।

ये तीनों अत्याधुनिक तकनीक पर आधारित हैं। टरबाइन एयरोप्लेन की तकनीक पर कार्य करता है। पहले दिन इसको 3000 आरपीएम की क्षमता से चलाया गया।

पति की धमकी से आहत महिला ने जहर खाकर दी जान

बांदा, संवाददाता। पति द्वारा घर खर्च न भेजने और मांगने पर अभद्रता कर छोड़ने की धमकी देने से आहत होकर पत्नी ने जहर खाकर जान दे दी। शहर कोतवाली क्षेत्र के खाईंपार मोहल्ला निवासी चंदा उर्फ फरजाना खातून (44) ने मंगलवार को सुबह घर में जहर खा लिया। इससे उसकी हालत बिगड़ गई। परिजन उसे लेकर जिला अस्पताल पहुंचे। यहां से डॉक्टरों ने उसे रानी दुर्गावती मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। मेडिकल कॉलेज में दोपहर के समय उसने दम तोड़ दिया। भाई मेराज ने बताया कि चंदा के पति इरफान अहमद मुंबई में रहकर कपड़े का व्यवसाय करते हैं। चंदा के दो बेटे फरहान, अयान व बेटी जोया है। सभी बालिग हैं। कई महीने से इरफान मुंबई से घर खर्च नहीं भेज रहा है। जिससे घर–गृहस्थी चलाना मुश्किल हो रहा था। आरोप है कि मंगलवार को सुबह चंदा ने पति को फोन कर घर खर्च भेजने की बात कही तो उसने फोन पर चंदा से अभद्रता कर छोड़ने की धमकी दी। जिससे आहत होकर उसने जहर खा लिया। शहर कोतवाल पंकज सिंह ने बताया कि पति–पत्नी के आपसी विवाद के चलते महिला ने जहर खाकर जान दी है। शव का पोस्टमार्टम कराया गया है।

डीआईजी कार्यालय के बाहर युवक ने ब्लेड से काटा गला

बांदा, संवाददाता। जिला अस्पताल रोड स्थित डीआईजी कार्यालय के बाहर एक युवक ने ब्लेड से अपना गला काट लिया। पुलिस ने उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया। यहां से भागकर युवक दोबारा सड़क पर आ गया। डॉक्टरों ने पुलिस की सहायता से उसे रानी दुर्गावती मेडिकल कॉलेज में मानसिक रोग विभाग में भर्ती कराया गया है। भाई ने युवक नशे का आदी बताया है। शहर कोतवाली क्षेत्र के बंगालीपुरा मोहल्ला निवासी लवकुश प्रजापति (30) ने मंगलवार को सुबह जिला अस्पताल रोड स्थित डीआईजी कार्यालय के बाहर ब्लेड से अपना गला काट लिया। जानकारी पर सिविल लाइन चौकी इंचार्ज परवेज अहमद व जिला अस्पताल चौकी से एसआई आरएल सरोज वहां पहुंचे और उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया। यहां से पट्टी कराकर दोबारा वह जिला अस्पताल से भाग निकला। पुलिस उसे दोबारा पकड़ लाई। चौकी इंचार्ज कालू कुआं अरविंद मौर्य ने उसके घर में सूचना दी। सूचना पर पहुंचे बड़े भाई कामता ने बताया कि वह लामा गांव के रहने वाले हैं। लवकुश तीन भाइयों में सबसे छोटा है। भाई ने बताया कि लवकुश नशे का आदी है। दिन भर नशे में रहता है। घर में भी हंगामा करता है। उसका मानसिक संतुलन भी ठीक नहीं रहता है। इसी के चलते उसने यह हरकत की है। शहर कोतवाल पंकज सिंह ने बताया कि लवकुश अविवाहित है। नशे का आदी है। नशे के चलते उसका मानसिक संतुलन ठीक नहीं रहता है। इसी के चलते उसने यह आत्मघाती कदम उठाया था।

हादसे ने उजाड़ दिया परिवार, भाई–बहन और मां की मौत

आगरा, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के आगरा में बुधवार की सुबह भीषण हादसा हो गया। तेज रफ्तार कैंटर ने बाइक सवारों को कुचल दिया। भाई–बहन और मां की मौके पर ही मौत हो गई। घटना देख आसपास के लोग भागकर पहुंचे। लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटना की जानकारी ली। हादसा डौकी थाना क्षेत्र के आगरा–फतेहाबाद मार्ग स्थित गुर्जा गांव के पास हुआ। मौके पर पहुंची पुलिस ने बताया कि हादसा सुबह करीब 11 बजे हुआ। हरीपर्वत थाना क्षेत्र के खंदारी के आजाद नगर निवासी आशीष (32) अपना मां कलावती (50) और बहन अंजलि (21) के साथ बाइक पर जा रहे थे। वह घर से बाह क्षेत्र के तनारी गांव जाने के लिए निकले थे। गुर्जा गांव के पास तेज रफ्तार कैंटर ने बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर लगने के बाद तीनों बाइक सवार छिटककर दूर जा गिरे। कुछ ही देर में तीनों ने दम तोड़ दिया। घटना देख आसपास के लोग भागकर पहुंचे। आरोपी चालक गाड़ी लेकर भागने लगा। ग्रामीणों ने पीछा करके उसे पकड़ लिया। उसे हिरासत में लिया गया है। एसीपी फतेहाबाद पुलिस टीम के साथ पहुंचे।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0 - 7007415808, 9628325542, 9415034002
RNI NO - UPHIN/2022/86937
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।